स्थापित 1968

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

₹5

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग मासिक पत्रिका

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

अंक 3 ✦ प्रकाशन तिथि : 25 सितम्बर 2021 ✦ वर्ष 10 ✦ कुल पृष्ठ 44 ✦ मूल्य ₹5

इस विजयदशमी पर हम सभी सामाजिक बंधु अपने मतभेदों को भुलाकर नए पथ की ओर अग्रसर हों

स्व. श्री स्वरूप चन्द जी जैन (मारसन्स)

(19 अगस्त 1927 – 31 अगस्त 2016)

जैन समाज के लिये आपका योगदान एवं समाज को एक सूत्र में बांधे रखने का अन्तिम सन्देश सदैव स्मरणीय रहेगा।

आपका प्रेरणामय जीवन हमारे लिए सदैव पथ प्रदर्शक रहेगा।

MARSON'S

ISO 9001:2000 CERTIFIED COMPANY

समस्त परिवारीजन
स्टाफ एवं कर्मचारीगण

MARSON'S ELECTRICAL INDUSTRIES

(Prop. MEI Power Pvt. Ltd.)

www.marsonselectricals.com • E-mail : info@marsonselectricals.com
1/189, Delhi Gate, Civil Lines, Agra-282002 (India)
Ph : +91-562-2520027, 2850812 • Fax : +91-562-2851306

Works :
Mathura Road, Artoni, Agra - 282007 (India)
Ph : +91-2641448, 2642327-28 • Fax : +91-562-2641435

TRANSFORMERS EXPORTED TO OVER 15 COUNTRIES

सामाजिक चेतना एवं जागरुकता के लिये सजग

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा का मुख पत्र

(पल्लीवाल, जैसवाल, सैलवाल सम्बन्धित जैन समाज)

Email : shripalliwaljain.patrika@gmail.com

मूल्य ₹ 5/-

अंक 3 ✦ 25 सितम्बर 2021 ✦ वर्ष 10

कुल पृष्ठ : 44

पूर्व प्रकाशन मथुरा से, सम्प्रति जयपुर से प्रकाशित

महासभा पदाधिकारी

श्री आर.सी. जैन *(अध्यक्ष)*
(सेवानिवृत्त आई.ए.एस.)
एन-19, आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग,
जयपुर (राज.)-302018
मोबा. : 9414279070, 9829999335
E-mail : rcjainras@gmail.com

श्री राजीव रतन जैन *(महामंत्री)*
301-ए, सुख सागर अपार्टमेन्ट, 4, जानकी नगर मेन,
इन्दौर (म.प्र.)-452001, मोबा.: 9425110204
E-mail : jainrajeevratan@gmail.com

श्री अजीत जैन *(अर्थमंत्री)*
1द39, काला कुंआ हा.बोर्ड, अलवर (राज.)-301002
फोन : 0144-2360115, मोबा.: 9413272178
E-mail : akjain2021@yahoo.in

पत्रिका प्रबन्ध एवं सम्पादक मण्डल

डॉ. अनुपम जैन *(परामर्शदाता)*
'ज्ञानछाया', डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452009
फोन : 0731-2797790, मोबा.: 9425053822
E-mail : anupamjain3@rediffmail.com

श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क
आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018
फोन : 0141-2553272, मोबा.: 9829134926
E-mail : csjain30@yahoo.co.in

श्री प्रकाश चन्द जैन *(सम्पादक)*
78, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार ''बी''
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302015
मोबा.: 9828374013
E-mail : pcjain49@gmail.com

श्री पारस जैन गहनौली *(सह-सम्पादक)*
बी-204बी, 10-बी स्कीम, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302018, मोबा.: 9928715869

श्री महेश चन्द जैन *(अर्थ संयोजक)*
36-सी, कृष्णा विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302015, मोबा.: 9828288830
E-mail : 3466mahesh@gmail.com

संयोजक की कलम से....

चिंतन

एकल परिवार के कारण वृद्धजनों की स्थिति बड़ी असमंजस की हो रही है। जो वृद्धजन अपने पारिवारिक व्यापार में अपने बच्चों के साथ जुड़े रहते हैं, उनका समय तो आसानी से कट जाता है। सरकारी सर्विस से रिटायर होने वाले वृद्धजन पेन्शन सुविधा के कारण आर्थिक रूप से बच्चों (पाल्यों) पर निर्भर नहीं होते हैं। लेकिन एकाकी रहकर जीवन काटना उनके लिए भी कठिन होता है। उनके पाल्य अच्छी सर्विस के कारण पिता का घर छोड़कर अन्य शहरों में चले जाते हैं तथा वृद्धजन अपने ही घर में अकेले रह जाते हैं।

अपना घर छोड़कर बच्चों के पास जाकर समय काटना भी कठिन होता है। परिवार की बुजुर्ग महिला (माता) तो बहु-बेटियों के साथ घर में छोटे-मोटे कार्यों में हाथ बंटाकर अपना समय काट लेती हैं, लेकिन वृद्ध पिता के लिए अनजान स्थानों में यह सम्भव नहीं होता। सुबह शाम की दैनिक क्रिया के बाद सारा दिन घर में अकेले बैठा रहना, किताब, अखबार या टीवी देखने के अलावा कोई कार्य नहीं होता। वह भी जब शारीरिक रूप से वह स्वस्थ हैं। किसी रोग के चंगुल में फंस जाने के बाद तो उनका जीवन दूभर हो जाता है। यदि पुत्र व पुत्रवधु दोनों ही सर्विस करते हैं तो घर की चौकीदारी या बच्चों की है देखभाल के अलावा कोई कार्य नहीं रहता। फिर अपने द्वारा बनाये गये सूने पड़े घर की चिंता भी हर क्षण सताती रहती है। लेकिन सबसे कष्टमय जीवन तो उन बुजुर्गों का होता है जो किसी प्राइवेट सर्विस में होते हैं तथा अशक्त होने पर सर्विस से वंचित कर दिये जाते हैं। कोई जमापूंजी या पेंशन की सुविधा नहीं होती है। घर बैठे अपने पाल्यों पर ही निर्भर रहते हैं। उनका जीवन कैसे कट रहा होगा, वही जानते हैं। भागदौड़ भरी जिंदगी तथा वर्तमान परिपेक्ष में श्रवण कुमार जैसे माता-पिता भक्त पाल्य मिलना भी कठिन है। कुछ स्वयंसेवी संस्थाएं वृद्धाश्रम बनाकर वृद्धजनों को राहत देने का प्रयास कर रही हैं, लेकिन यह भी अब व्यावसायिक होता जा रहा है। धनिक परिवार के लोग ही इनमें रह पाते हैं। लेकिन वहां घर जैसी सहानुभूति वेतनभोगी कर्मचारियों से आपेक्षित नहीं होती। अतः ऐसे वृद्ध जनों के लिए भगवान का ही सहारा होता है आवश्यकता इस बात की है की देश स्तर पर एवं सामाजिक स्तर पर यह प्रयास किए जाएं कि ऐसे व्यक्तियों के लिए एक सामूहिक निवास का निर्माण किया जाए और वहां पर ऐसे सभी वृद्ध जनों की देखभाल चिकित्सा सुविधा स्वास्थ्य आदि की व्यवस्था की जा सकती है यह विचारणीय विषय है।

-चन्द्रशेखर जैन

पत्रिका में प्रकाशित लेख एवं विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
यह लेखकों के निजी विचार माने जाने चाहिये।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व एवं दसलक्षण पर्व

के पावन प्रसंग पर सर्वसमाज, विद्वान लेखकों एवं पाठकों से
विगत वर्ष में हुई ज्ञात-अज्ञात भूलों के लिए हम हृदय से क्षमा याचना करते हैं।

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा

अध्यक्ष महासभा
श्री आर.सी. जैन, *Retd. IAS*
(जयपुर)

महामंत्री महासभा
श्री राजीव रतन जैन
(इन्दौर)

अर्थमंत्री महासभा
श्री अजीत जैन
(अलवर)

★★★

श्री पल्लीवाल जैन पत्रिका

परामर्शदाता पत्रिका
डॉ. अनुपम जैन
(इन्दौर)

संयोजक पत्रिका
श्री चन्द्रशेखर जैन
(जयपुर)

संपादक पत्रिका
श्री प्रकाश चन्द जैन
(जयपुर)

सहसंपादक पत्रिका
श्री पारस जैन गहनौली
(जयपुर)

अर्थसंयोजक पत्रिका
श्री महेश चन्द जैन
(जयपुर)

श्वास का अनुशासन

एक शिविरार्थी भाई ने कहा- प्रेक्षा ध्यान का प्रयोग प्रारम्भ हुआ, एक घोष सुना- आत्मा के द्वारा आत्मा को देखें। मन बहुत प्रसन्न हुआ कि हम आत्मा को देख पायेंगे। चिर-स्वप्न साकार होगा। मनुष्य में आत्मा को देखने की प्रबल लालसा होती है। प्रत्येक व्यक्ति आत्मा को देखना चाहता है, परमात्मा का साक्षात्कार करना चाहता है। वह उन्हें खुली आंखों से देखना चाहता है, सामने खड़े हों, वैसे देखना चाहता है। मुझे अच्छा लगा कि बस, अब आत्मा का साक्षात्कार हो जाएगा। किन्तु प्रयोग के प्रारम्भ में ही कहा गया श्वास को देखें। मुझे बड़ी निराशा हुई। आया था आत्म साक्षात्कार प्रश्न हुआ, करने और कराया जा रहा है श्वास दर्शन। स्वप्न मीठा था, पर वह बीच में ही टूट गया। कहां आत्म साक्षात्कार और कहां श्वास दर्शन! क्या शिविर में श्वास को ही देख पायेगे? यदि यही शिविर की फलश्रुति है। तो यहां आने की जरूरत ही क्या है? श्वास बेचारा रोज चलता है। घर पर चलता है, दुकान में चलता है। सोते, उठते, बैठते यह चलता ही रहता है। उसे हम कहीं भी देख लेते। इतना आयास उठाकर यहां आने की आवश्यकता ही क्या थी? फिर हमें बताया क्यों गया कि आत्मा के द्वारा आत्मा को देखें?

तर्क आखिर तर्क होता है। प्रत्येक तर्क का प्रतितर्क होता है। कम जोर तर्क को बलवान तर्क काट देता है। तर्क कितना ही बलवान हो उसको काटने के लिए दूसरा तर्क प्रस्तुत किया जा सकता है। दुनिया में ऐसा एक भी तर्क नहीं है, जिसका प्रतितर्क न हो, विरोधी तर्क न हो। एक बार सुनते हैं तो लगता है कि तर्क अकाट्य है। जो अकाट्य होता है वह तर्क हो नहीं सकता अनुभव मात्र अकाट्य होता है। तर्क कभी अकाट्य नहीं होता। तर्क है बुद्धि का खेल। जो बुद्धि से संबंधित है वह अकाट्य नहीं हो सकता। अनुभव का संबंध चेतना से है। उसके साथ शाश्वत सत्य का पक्ष होता है। तर्क के साथ शाश्वत सत्य का पक्ष नहीं होता।

मैं तर्क में नहीं उलझा और इसीलिए नहीं उलझा कि कल ही मैंने अपने आचार्य से सुना था- तर्क में सचाई नहीं मिलती। तर्क सत्य तक नहीं पहुंचाता। मैं उलझा नहीं। मैंने शिविरार्थी की बात सुनी। दो क्षण मौन रहा। फिर मैंने कहा- भाई! तुम्हारी बात को काटना नहीं चाहता। तर्क के प्रति तर्क प्रस्तुत करना नहीं रहता। एक कहानी सुनाना चाहता हूँ और इसलिए कि तर्क नीरस होता है, कहानी सरस होती है। जब हम सरलता की बातें कर रहे हैं तो फिर नीरसता को बीच में क्यों लायें? तुम्हारे मन में यह प्रश्न इसलिये उठा कि तुम नियम को नहीं जानते। यदि नियम ज्ञात होता तो यह प्रश्न समस्या नहीं बनता। जब तक हम नियम को नहीं जानते तब तक हर बात समस्या बन जाती है।

एक आदमी दौड़ा जा रहा था। पीछे-पीछे कुत्ता भी दौड़ रहा था। आदमी कुत्ते के डर से भाग रहा था। आगे आदमी दौड़ रहा है, पीछे कुत्ता भाग रहा है। पर दोनों क्यों दौड़ रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर नियम को जान लेने पर ही दिया जा सकता है। आदमी भय के कारण दौड़ रहा है? जब भय बढ़ता है तब आदमी की एड्रीनल ग्रंथि का स्राव बढ़ जाता है। उस एड्रीनलीन रस की गन्ध कुत्ते को आती है, कुत्ता गन्ध के पीछे दौड़ता है। आदमी के पीछे कुत्ता नहीं दौड़ता। कुत्ता दौड़ता है उस गन्ध के पीछे। आदमी भय को छोड़कर यदि खड़ा हो जाता है, कुत्ते को गन्ध आनी बन्द हो जाती है और वह भी खड़ा रह जाता है। दौड़ता हुआ आदमी स्वयं कुत्ते को दौड़ाता है। गन्ध का आकर्षण कुत्ते को दौड़ाता है।

आदमी खड़ा रहना नहीं जानता, इसलिये सब उसके पीछे दौड़ रहे हैं। यदि वह खड़ा रहना जान जाए तो कोई भी पीछे नहीं दौड़ेगा। स्वयं खड़ा रहे तो सब खड़े रह जाएंगे। हम नियम को नहीं जानते। दशवैकालिक आगम में एक श्लोक है-

'हत्थसंजए पायसंजए, वायसंजए संजइंदिए।
अज्झप्परए सुसमाहियप्पा सुत्तत्थं च वियाणई जे स भिक्खु॥'

इस श्लोक को पढ़ा तो लगा कि आगमकार ने कितनी छोटी-छोटी बातों का उल्लेख किया है। आगमकार कहते हैं- हाथ का संयम करो, पैरों का संयम करो, वाणी का संयम करो। ये सारी साधारण बातें हैं। किंतु जब नियम का पता चला तब ज्ञात हुआ कि यह श्लोक बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इसमें दिये गये निर्देश बहुत महत्वपूर्ण हैं। इस श्लोक का नियम में पहले प्रस्तुत कर चुका हूं लेश्या के प्रकरण में, 'आभामंडल' ग्रंथ में। दूसरे नियम को आज प्रस्तुत करना चाहता हूं।

यह एक श्लोक है। इसकी कम से कम सात सौ व्याख्याएं तो हो सकती हैं। एक नियम बतलाया गया है कि भगवान् महावीर के प्रत्येक वचन की सात सौ व्याख्याएं की जा सकती

हैं। यदि कोई अधिक प्रज्ञा वाला व्यक्ति हो और अधिक नयों का ज्ञाता हो तो उसकी सात हजार, सात लाख, सात करोड़ या सात अरब व्याख्याएं भी कर सकता है। परन्तु कम-से-कम सात सौ व्याख्याएं तो हमारे वश की बात है। यह तभी संभव है, जब हम नियम को जान जाएं। नियम का ज्ञान होने पर नई-नई बातें उद्घाटित की जा सकती हैं।

श्लोक में तीन तथ्य बताए गए हैं। हाथ का संयम करो, पैर का संयम करो और वाणी का संयम करो। इसके द्वारा तुम जितेन्द्रिय बन जाओगे। प्रश्न होता है कैसे होगा? हाथ का संयम होगा तो स्पर्शन इन्द्रिय पर विजय प्राप्त हो जाएगी। ये सब जुड़े हुए हैं। इनके सम्बन्ध का नियम ज्ञात होने पर इनको जीतना सरल हो जाता है। आयुर्वेद के आचार्यों ने लिखा- आंख में पीड़ा हो तो पैर की अंगुलियों पर तेल लगाओ, आंख की पीड़ा शांत हो जाएगी। यह कैसा सम्बन्ध? ऊंट और गधे का रिश्ता। कहां आंख और पैर! पर यह एक सचाई है। आंख और पैर दोनों अग्नितत्त्व से जुड़े हुए हैं। अग्नितत्त्व की ज्ञानेन्द्रिय है चक्षु और कर्मेन्द्रिय है पैर। दोनों का नियम परस्पर जुड़ा हुआ है। यह नियम हो जाने पर उनका सम्बन्ध मन में आश्चर्य पैदा नहीं करता। तेज धूप में चलते हैं तब पैर गर्म हो जाते हैं तो साथ-साथ आंखें भी गरमा जाती हैं। आंख बीमार होती है तो पैरों को ठंडे पानी में रखने से उसकी बीमारी शान्त हो जाती है। वायुतत्त्व की ज्ञानेन्द्रिय है स्पर्शन और कर्मेन्द्रिय है हाथ। हाथ का और स्पर्शन इन्द्रिय का सम्बन्ध जुड़ा हुआ है। हाथ का संयम होने पर स्पर्शन इन्द्रिय वश में हो जाती है। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण तथ्य उद्घाटित हुआ है। इंद्रियों पर विजय पाने के और भी सरल उपाय हैं। आंख को बन्द कर दो, दिखाई नहीं देगा। कान में अंगुली डाल दो, सुनाई नहीं देगा। नाक में रुई डाल दो, सुगन्ध या दुर्गन्ध नहीं आएगी। परन्तु स्पर्शन इन्द्रिय पर विजय कैसे पाई जाए? कोई उपाय ही नहीं लगता। यह सबसे जटिल प्रश्न था। परन्तु इस श्लोक का प्रथम शब्द 'हत्थसंजए' इस प्रश्न का सचोट समाधान प्रस्तुत करता है। हाथ का संयम करो, स्पर्शन इन्द्रिय पर विजय प्राप्त हो जाएगी। हाथ का संयम करने से उनकी विद्युत् भीतर की ओर प्रवाहित होगी तब स्पर्शन इन्द्रिय पर विजय प्राप्त हो जाएगी। वायुतत्त्व का सम्बन्ध है स्पर्शन इन्द्रिय से। वायुतत्त्व का सम्बन्ध है हमारे हाथों से। ध्यान-काल में जिनको वायु अधिक सताता है, ज्यादा चंचलता लाने लगता है। तब एक मुद्रा की जाती है- वायु-विजय के लिये। साधक पद्मासन में बैठ कर हाथ के अंगूठों के निचले पौरों पर कनिष्ठा अंगुली को लगा देता है। इस मुद्रा के कुछ ही समय पश्चात् वायु का प्रकोप कम होने लग जाता है।

पैर का संयम करने से आंख का संयम हो जाएगा। वाणी का संयम करने से श्रोत्रेन्द्रिय का संयम हो जाएगा। दोनों आकाश तत्त्व से संबद्ध हैं। आकाश तत्त्व की ज्ञानेन्द्रिय है श्रोत और कर्मेन्द्रिय है वाक्।

जब हम इन सब नियमों को जान लेते हैं। तब यह श्लोक हमें बहुत महत्त्वपूर्ण लगता है। जब तक नियमों को नहीं जानते तब तक श्लोकगत बातें साधारण सी लगती हैं। हाथ का संयम करो। हाथ का क्या संयम करें? क्या उसको हिलाएं नहीं? किसी को चांटा तो मार ही नहीं रहे हैं। फिर और अधिक क्या संयम करें? पैर का क्या संयम करें? किसी को लात तो मार ही नहीं रहे हैं। फिर कैसा संयम? जब नियम ज्ञात नहीं होता तब अनेक प्रकार के प्रश्न खड़े होते हैं। जब नियम तक पहुंच जाते हैं तब सारे प्रश्न स्वतः समाहित हो जाते हैं।

तुम मैंने प्रश्नकर्ता शिविरार्थी से कहा- तुम इसलिये कर रहे हो कि नियम को नहीं जानते। नियम को जान लो प्रश्न समाप्त हो जाएगा।

एक व्यक्ति ने किसी जौहरी से कहा- तुम मेरे घर पर चलो। मेरे पास एक बहुमूल्य हीरे की अंगूठी है। उसका सही मूल्यांकन कराना है। जौहरी उसके घर गया। पहले दरवाजे में प्रवेश किया। वह व्यक्ति बोला देखो, यह राजस्थानी शिल्प है। कितनी सुन्दर कारीगरी है! शिल्पी ने कितनी गजब का शिल्प प्रस्तुत किया है। दूसरे दरवाजे में प्रवेश किया। व्यक्ति ने जौहरी से कहा- देखो, कितना सुन्दर वातायन है। इसकी चित्र कला को देखो। कितने भव्य और सुन्दर चित्र हैं! चित्रकार ने अपनी सारी कला यहां अभिव्यक्त कर दी है। जौहरी बोला- भले आदमी! मुझे इन सब चीजों को देखने-परखने का समय नहीं है। मैं तो हीरे की अंगूठी देखने आया हूं। बताओ, वह कहां है? वह बोला- धैर्य रखो। जब तुम आ ही गए हो तो मेरी सारी चीजें देखो। यह नहीं होगा कि मैं सबसे पहले हीरे की अंगूठी दिखा दूं। घर आ ही गए तो सब कुछ देखना होगा।

दोनों ने तीसरे दरवाजे में प्रवेश किया। वह बोला- जौहरी जी! देखो, कितना सुन्दर स्थापत्य है! दुनिया में अन्यत्र ऐसा स्थापत्य देखने को नहीं मिलेगा।

इस प्रकार वह सातों दरवाजों का वर्णन करते-करते जौहरी को घुमाता रहा। एक-दो घण्टा बीत गया। फिर उसने कहा- यह हमारा अतिथिगृह है। यह हमारा स्वागत कक्ष है। यह

भोजन गृह और यह शयन कक्ष है। तुम स्वागत कक्ष में बैठो। मैं नाश्ते की तैयारी करता हूं। आए हो तो बिना खाए कैसे जाओगे।

इस प्रकार वह जौहरी का समय लेता रहा। नाश्ता कराया। फिर घर की छत पर ले गया। वहां नगर का दृश्य दिखाया। फिर उसे भूमिगृह (भोंहरे) में ले गया। वहां उसे एक आसान पर बिठाया। अलमारी खोली। एक डब्बी निकाली। डब्बी को खोला। उसमें थी वह हीरे की अंगूठी। उस पर अनेक वस्त्र लपेट रखे थे। एक-एक वस्त्र खण्ड को अलग किया। फिर अंगूठी लेकर लौहरी से कहा- यह है मेरी हीरे की अंगूठी।

मैंने मेरे शिविरार्थी प्रश्नकर्ता से पूछा- क्या वह जौहरी मूर्ख था जो हीरे की अंगूठी देखने आया था और उसको देखने की प्रक्रिया में और और पचासों चीजें देखीं। वह बोला- मूर्ख कैसे? यह तो कम ही है। यदि वह पहले दरवाजे में नहीं आता तो भूमिगृह में कैसे जाता? एक-एक दरवाजे पार करने पर ही तो वहां पहुंचा है। अलमारी नहीं खुलती तो डिबिया कैसे निकलती? डिबिया नहीं निकलती तो अंगूठी कैसे बाहर आती। यह तो क्रम है। सबको इसी क्रम में से गुजरना होता है। यह मूर्खता क्यों? यह तो समझदारी है।

मैंने कहा- तो फिर तुम कैसी मूर्खता की बात करते हो? आत्मा को देखना चाहते हो, उसका साक्षात्कार करना चाहते हो तो क्या श्वास दर्शन किये बिना आत्म-दर्शन हो जाएगा? श्वास-दर्शन प्रथम द्वार है। क्या प्रथम द्वार में प्रवेश किए बिना भूमिगृह में चले जाओगे? यह कभी सम्भव नहीं है। बाहर से छलांग मार कर भीतर नहीं पहुंचा जा सकता। एक-एक दरवाजे को क्रमशः पार करके ही भीतर तक पहुंचा जा सकता है। यह निश्चित नियम है। आत्मा तक पहुंचने के लिए सात दरवाजे पार करने होंगे। पहले श्वास को देखना है। शरीर को देखना है। शरीर में होने वाले परिवर्तनों को–रसायनों को देखना है। शरीर की विद्युत् के आवेगों को देखना है। उस विद्युत् द्वारा होने वाले मस्तिष्कीय परिवर्तनों को देखना है। प्रत्येक कोशिका को देखना है। उसमें होने वाली प्रक्रिया को देखना है। इस प्रकार स्थूल शरीर की सीमा को पार कर, फिर सूक्ष्म शरीर-तैजस शरीर को देखना है। वहां उभरने वाले सारे प्रकम्पनों को देखना है, पकड़ना है। वहां आने वाले चित्रों को देखना है। वहां से आगे सूक्ष्मतम शरीर-कार्मण शरीर, कर्मशरीर तक पहुंचना है। वहां से सारा तंत्र संचालित होता है। बहुत बड़ा तंत्र है वह। वहां लाखों करोड़ों नहीं, असंख्य कर्मचारी कार्यरत रहते हैं। वे प्रत्येक क्रिया को सही ढंग से संचालित कर रहे हैं। वहां कुछ भी अन्यथा नहीं होता। उस पूरे तंत्र को देखना है। पूरे कर्मशरीर को देखना है। उसकी प्रत्येक क्रिया का साक्षात् करना है। इतना होने पर एक नया मार्ग खुलेगा। उस मार्ग पर बढ़ते ही सब कुछ प्रकाश ही प्रकाश नजर आएगा। यह है चेतना का दर्शन। यह है आत्मा का दर्शन, आत्मा का साक्षात्कार। यह है हीरे की अंगूठी, यह है उस हीरे की अंगूठी को देखने की प्रक्रिया।

तुम चाहते हो कि पहला दरवाजा खुले ही नहीं और आत्मा तक पहुंच जाएं, परमात्मा मिल जाए। यह कभी संभव नहीं है। प्राप्ति का क्रम है। उसका अतिक्रमण नहीं होना चाहिए। यह शरीररूपी मकान बहुत बड़ा है, विशाल है। एक-एक कर इसके सात परकोटे हैं। बिना इनको पार किये भीतर तक नहीं पहुंचा जा सकता। भीतर से बहुत बड़ी व्यवस्था है। उसे पूर्णरूपेण समझे बिना भीतर प्रवेश नहीं हो सकता। छलांग की बात मत करो। विकासवाद ने छलांग की बात कही। कुछेक लोग छलांग की बात करते हैं, उनमें विश्वास करते हैं। परन्तु अध्यात्म के मार्ग में साधना के पथ में छलांग की बात सार्थक नहीं है। वहां क्रम से ही चलना पड़ता है। धीरे धीरे एक-एक आयाम को पार कर, मंजिल प्राप्त करनी होती है।

मैंने कहा, अब तो समझ गये तुम कि श्वास को देखना आत्मा को देखना है। क्या दरवाजे को मकान से अलग किया जा सकता है? कभी नहीं। यदि दरवाजा मकान नहीं है तो कमरा भी मकान नहीं है। बाहर का कमरा भी मकान नहीं है तो भीतर का कमरा भी मकान नहीं है। यदि दरवाजा और कमरे मकान नहीं हैं तो फिर मकान है क्या? उसका अस्तित्व कहां है? दरवाजे को तोड़ दो, कमरों को तोड़ दो, मकान कुछ रहेगा ही नहीं। दरवाजा भी मकान है, घर का आंगन भी मकान है। कमरा भी मकान है। सबको मिलाकर देखो, मकान नजर आएगा। सबको तोड़ कर देखो, कोई मकान रहेगा ही नहीं। क्या हाथ शरीर है? नहीं मानेंगे कि हाथ शरीर है। आदमी का हाथ सड़ गया। उसको काट कर अलग कर दिया तो क्या शरीर नहीं बचा? शरीर तो बचा, फिर हाथ शरीर कैसे? पैर शरीर कैसे? फिर सिर शरीर कैसे? हाथ भी शरीर नहीं, पैर भी शरीर नहीं और सिर भी शरीर नहीं। तो फिर शरीर है क्या? सब को अलग-अलग तोड़ कर शरीर को नहीं देखा जा सकता। प्रत्येक अवयव जुड़ा हुआ है, वह शरीर है। टूट जाता है, फिर वह शरीर नहीं होता। हम जुड़ी हुई बात को देखें।

श्वास आत्मा है। श्वास का दर्शन आत्मा का दर्शन है।

यह आपको अजीब-सा लग सकता है, पर है यह सचाई। क्या कोई मुर्दा श्वास लेता है? कभी नहीं लेता। श्वास वही लेता है जिसमें प्राण होते हैं। प्राण उसमें होते हैं जिसमें चेतना होती है। चेतना उसमें होती है जिसके आत्मा है। आत्मा के बिना चेतना नहीं, चेतना के बिना प्राण नहीं और प्राण के बिना श्वास नहीं। श्वास चल रहा है। उसका संचालक कौन है? उसका संचालक है आत्मा। आत्मा के निकल जाने पर श्वास भी बन्द हो जाता है। तो क्या आत्मा के द्वारा जो संचालित है, उसे देखना आत्मा को देखना नहीं है? निश्चित ही आत्मा को देखना है। हम केवल श्वास को नहीं देखते उसके साथ चलने वाली प्राणशक्ति को भी देखते हैं। हम केवल प्राणशक्ति को नहीं देखते, संचालित करने वाली चेतना को भी देखते हैं। हम केवल चेतना को नहीं देखते उसके अधिष्ठान आत्मा को भी देखते हैं। इस तर्क के आधार पर कहा जा सकता है कि श्वास को देखना-आत्मा को देखना है। श्वास-दर्शन आत्म दर्शन है। इसलिए साधना क्रम में जैसे आहारशुद्धि और इन्द्रियशुद्धि अपेक्षित है, वैसे ही श्वासशुद्धि भी बहुत आवश्यक है। जब तक श्वास की शुद्धि नहीं होती तब तक आत्म-दर्शन केवल कल्पना मात्र रह जाता है। मनोनुशासनम् में आनापन शुद्धि-श्वासशुद्धि के लिए चार बातें अपेक्षित बतलाई हैं- प्राणायाम, समतलश्वास, दीर्घश्वास और कायोत्सर्ग जब श्वासशुद्धि होती है तब आत्म-दर्शन का मार्ग प्रशस्त होता है।

पहला साधन है प्राणायाम। इसका अर्थ है- प्राण को आयाम देना। उसको लम्बा-चौड़ा करना। प्राण संकुचित रहता है तो श्वास की शुद्धि नहीं होती। श्वास एक बहुत बड़ा तंत्र है। श्वास हमारे व्यक्तित्व के दोनों पहलुओं को बलवान बनाता है, उन्हें संतुलित बनाता है। हमारा एक पहलू है आंतरिक व्यक्तित्व का दूसरा पहलू है बाह्य व्यक्तित्व का। श्वास दोनों पर शासन करता है। वह भीतरी जगत् को भी प्रभावित करता है और बाहरी जगत् को भी प्रभावित करता है। यह एक मध्य-सेतु है जिसने श्वास का सही मूल्य नहीं समझा वह आगे नहीं बढ़ सकता। जो व्यक्ति मस्तिष्क का संतुलन करना चाहे और श्वास की उपेक्षा करे तो वह कभी सफल नहीं हो सकता। शरीर और मन का संतुलन श्वास के बिना नहीं हो सकता। इसलिए प्राणायाम बहुत जरूरी है।

दूसरा है दीर्घश्वास का प्रयोग। दीर्घश्वास वास्तव में सहज श्वास होता है। आदमी श्वास को सही ढंग से लेना नहीं जानता। श्वास तो छोटा होना ही नहीं चाहिये, लम्बा होना चाहिये। इसलिए दीर्घश्वास पद का चुनाव किया है। सहज श्वास का मतलब ही हैं पूरा श्वास, गहरा श्वास। आदमी यह जानता ही नहीं। सुना है मैंने कि पाठ्य पुस्तकों में यह पढ़ाया जाता है कि जिस श्वास से छाती फूले और पेट सिकुड़े, वह सही श्वास होता है। यह कैसे लिखा गया? इसका आधार क्या है? होना तो यह चाहिए कि श्वास लेते समय पेट फूलना चाहिए, छाती नहीं। जिस श्वास से पेट नहीं फूलता, वह सही श्वास नहीं होता। श्वास के स्पंदन पेट तक पहुंचने चाहिए। यह सही है कि श्वास फेफड़ों से आगे नहीं जाता। फेफड़ों के आगे एक मांसपेशी है- डायाफ्राम। इसे तनुपट कहा जाता है। उसके आगे श्वास जाने का रास्ता नहीं है। पर उसका दबाव आगे तक पहुंचता है, वह नाभि तक पहुंचता है। बच्चे को श्वास लेते देखें जब वह सोता होता है, तब श्वास के साथ-साथ उसका पेट फूलता है। यही सही श्वास है, पर बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता है, भावनाओं और आवेशों से भरता है, वैसे-वैसे श्वास छोटा होता चला जाता है, गलत होता चला जाता है। भावनाओं का, आवेगों का, आवेशों का श्वास के साथ गहरा संबंध है। गुस्सा आता है, वह श्वास को छोटा किए बिना नहीं आ सकता। आवेश या आवेग उतरता है, वह श्वास को छोटा किए बिना नहीं उतर सकता। हमारे श्वास की संख्या एक मिनट में सामान्यतया 15-17 होती है। आवेश काल में वह 30, 40, 50, 60 तक बढ़ जाती है।

यह निश्चित नियम है कि आवेश को उतरने के लिए श्वास को छोटा होना पड़ता है। अन्यथा उसे उचित पृष्ठभूमि नहीं मिलती। बिना आधार के आवेश कैसे उतर सकता है? दीर्घश्वास की स्थिति में आवेश आ ही नहीं सकता। बचपन में आदमी दीर्घश्वास या सहजश्वास लेने में अभ्यस्त होता है, परन्तु ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता है, श्वास छोटा करता चला जाता है या श्वास छोटा हो जाता है। यह गलत श्वास है। सही श्वास है दीर्घश्वास। इसे लेना हम नहीं जानते। जो पचास-पचास वर्षों को पार कर चुके हैं, जो जज हैं, वकील हैं, डॉक्टर हैं वे भी सही ढंग से श्वास लेना नहीं जानते। बड़ी अजीब कहानी है हमारे समाज की, हमारे विज्ञान की कि जो पाठ पहली कक्षा में पढ़ाया जाना चाहिए था, वह पाठ जीवन भर नहीं पढ़ाया जाता, नहीं पढ़ा जाता। पहला पाठ उचित रूप से नहीं पढ़ा जाता, नहीं पढ़ाया जाता इसलिए बाद में पढ़ाये जाने वाले सारे पाठ खतरनाक बन जाते हैं, सताने वाले बन जाते हैं। यदि पहला पाठ ठीक ढंग से पढ़-पढ़ा लिया जाता है तो आगे के सारे पाठ

अधिक लाभदायक बन जाते हैं। तात्पर्य यह है कि जो आदमी सही ढंग से श्वास लेना सीख जाता है, वह अपने जीवन में बहुत सफल होता है, फिर चाहे वह किसी भी क्षेत्र में रहे। व्यक्तित्व का निर्माता है सही श्वास और व्यक्तित्व का विघटक है गलत श्वास।

इसी परिप्रेक्ष्य में 'तुलसी अध्यात्म नीडम्' ने एक परिकल्पना की है कि आज के प्रत्येक आदमी को जीवन विज्ञान का पाठ पढ़ाया जाए। प्रायः सभी विद्यालयों, शोध संस्थानों, एजुकेशनल इन्स्टीट्यूटों में अनेक विषय पढ़ाए जाते हैं। विद्यार्थी उन विषयों में निष्णात होकर निकलते हैं, पर जीवन विज्ञान का बच्चा अत्यन्त उपेक्षित जीवन जी रहा है। उसे कोई यह भी नहीं पूछता- क्यों बच्चे! प्यास तो नहीं लगी है? कौन पिलाए उस प्यासे बच्चे को पानी? और सबको अतिरिक्त भोजन परोसा जा रहा है, ठूंस-ठूंस कर खिलाया जा रहा है पर इस भूखे-प्यासे बच्चे की ओर आंख उठाकर देखने के लिए भी किसी के पास समय नहीं है। बच्चा अत्यन्त उपेक्षित, उपेक्षित और उपेक्षित है।

जो आदमी जीवन-विज्ञान को नहीं पढ़ता, उसमें निष्णात नहीं होता वह समस्याओं से कभी मुक्ति नहीं पा सकता। फिर स्थिति आती है कि वह दूसरे के अधिकारों को, संपत्ति को हड़पने की चेष्टा करता है। और और अनेक बुराइयां उसमें आती हैं।

एक डॉक्टर जा रहा था। एक युवक दौड़ा-दौड़ा आया और बोला धन्यवाद डॉक्टर साहब, आपने मेरी भाभी का सफल इलाज किया, उसके लिए धन्यवाद देने के लिए आ गया। डॉक्टर ने पूछा- तुम्हारी भाभी एकदम स्वस्थ हो गई?

युवक बोला- हां, डॉक्टर साहब! वह समस्त रोगों से मुक्त हो गई। रोगों से ही नहीं इस संसार से मुक्त हो गई।

डॉक्टर बोला- फिर धन्यवाद कैसे?

डॉक्टर साहब! उसका वारिस मैं हूं। उसकी सारी संपत्ति मुझे मिल गई। अच्छा इलाज किया आपने कि वह जल्दी चल बसी। अन्यथा उसकी संपत्ति को पाने के लिए मुझे दो-चार वर्ष और रुकना पड़ता। आपने बड़ा उपकार किया। धन्यवाद।

जो व्यक्ति जीवन-विज्ञान का पाठ नहीं पढ़ता, वह ऐसा ही करता है।

तीसरा साधन है- समताल श्वास। समताल श्वास का अर्थ है श्वास लेने में जितना समय लगे, छोड़ने में भी उतना ही समय लगना चाहिए, कम या ज्यादा नहीं। इसका अभ्यास भी बहुत अपेक्षित है।

चौथा साधन है– कायोत्सर्ग-शिथिलीकरण कायोत्सर्ग के दो अर्थ हैं- काया को शिथिल करना और चेतना के प्रति जागृत रहना। आज का आदमी आवेशों के कारण बहुत तनावग्रस्त है। वह शिथिल होना नहीं जानता, छोड़ना नहीं जानता। वह कसना जानता है, ढीला होना नहीं। यह कसने की सबसे बड़ी समस्या है। एक बात दिमाग में आ गई, फिर वह जीवनभर नहीं निकलती। एक घटना घटित हो गई, वह मन से निकलती नहीं। किसी ने कुछ कह दिया, दिमाग में उसकी गांठ घुल जाती है। दिमाग तनावों से भर जाता है। प्रत्येक क्रिया उसमें तनाव पैदा करती है, प्रत्येक घटना लगाव पैदा करती है। घटना न घटे, यह कभी सम्भव नहीं। घटना घटती है। पर जो व्यक्ति श्वासशुद्धि की प्रक्रिया को जानता है, वह घटना से बंधता नहीं। घटना घटी, उसे जाना। बात समाप्त। उसका सघन संस्कार नहीं होता। पानी पर खींची हुई लकीर या बालू रेत में खींची हुई लकीर का संस्कार सघन नहीं होता। लकीर खींची और समाप्त। वह अधिक समय तक नहीं टिकती। पानी की लकीर तत्काल मिट जाती है। बालू की लकीर कुछ समय तक टिकती है। हवा चलते ही समाप्त हो जाती है। किंतु जब वह विचार या घटना पत्थर की लकीर बन जाती है, तब भगवान् ही बचाए। आज की प्रत्येक घटना आदमी के दिमाग में पत्थर की लकीर बनती जा रही है।

तनाव की समस्या से बचने के लिए कायोत्सर्ग ही एकमात्र उपाय है। इसका मतलब है- शिथिल बनो, ढीले बनो, इतने शिथिल की कहीं भी पत्थर की लकीर बने ही नहीं। पत्थर की लकीर बनने का मौका ही न मिले। कोई लकीर बने तो वह केवल बालू की लकीर या पानी की लकीर बने। लकीर बनी और समाप्त हो गई। बनने और समाप्त होने में समय न लगे। एक साथ हो। कायोत्सर्ग करते समय श्वास अपने आप शुद्ध और मन्द हो जाता है।

श्वास को शुद्ध और मन्द करने का चौथा साधन है- कायोत्सर्ग। प्रेक्षा ध्यान के अभ्यास में इन सभी साधनों का प्रयोग होता है। जैसे-जैसे श्वास की शुद्धि होती है, वह पवित्र और निर्मल होता चला जाता है और हमारा आत्म-दर्शन का स्फटिक पारदर्शी होता चला जाता है। एक दिन ऐसा आता है कि एक ओर खड़े हो तुम, एक ओर है यह पारदर्शी आत्मा और उसके पीछे झांक रही है तुम्हारी आंखें।

-आचार्य महाप्रज्ञ

'मैं कुछ होना चाहता हूँ' से साभार

TRAFO
Power & Electricals Pvt. Ltd.

TRAFO POWER & ELECTRICALS PVT. LTD.

AN ISO 9001:2008 COMPANY

PRODUCTS

-POWER & DISTRIBUTION TRANSFORMERS

-PRESSED STEEL RADIATORS

-SPECIAL PURPOSE TRANSFORMERS

-PACKAGE SUBSTATION

CONTACT

Trafo Power & Electricals Pvt. Ltd.
C-20 Site-C U.P.S.I.D.C., Industrial Area, Sikandra,
Agra, Uttar Pradesh - 282007, India

Phone No : +91-562-3290391
Fax : +91-562-2640388
E-mail : info@trafo.co.in

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री खैराती लाल जी जैन

(स्वर्गवास : 1 सितम्बर 2017)

स्व. श्रीमती दुर्गी जी जैन

(स्वर्गवास : 28 सितम्बर 2002)

हम सभी परिवारजन आपके प्रेरणादायक चरित्र और
जीवन का स्मरण करते हुए
श्रद्धा पूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

भाई :
धर्मचन्द जैन
हरिशचन्द जैन
ज्ञानचन्द जैन-विजया जैन

बहिन-बहनोई :
ललता देवी जैन *धर्मपत्नी स्व. श्री केवलचंद जैन*
आशा जैन-सुभाष जैन

पुत्र-पुत्रवधु :
ओम प्रकाश जैन-स्वर्णलता जैन
प्रेम प्रकाश जैन-सीमा जैन
जय प्रकाश जैन-शोभा जैन

पुत्री-दामाद :
मैना जैन-मुकेश जैन

पौत्री-दामाद :
नेहा जैन-कुलदीप जैन
श्रेया जैन-दिनेश जैन
प्रियल जैन-आकाश जैन

पोता, पोती :
पराग, मनन, चित्रांश, प्रिया, धारवी जैन

नातीन : आकांक्षा

ए-103, रणजीत नगर, 60 फीट रोड, अलवर
मो.: 9414484145, 9718890055, 8239005224

प्रथम पुण्यतिथि

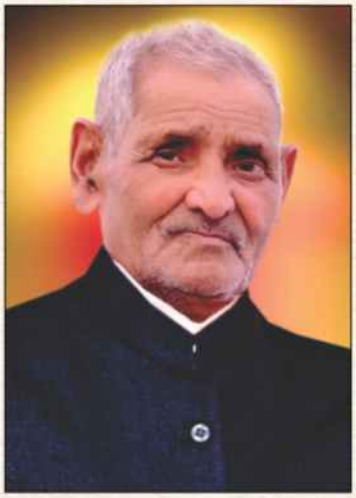

स्व. श्री सेठ राजाराम जी जैन

बामौर (मुरैना)

(स्वर्गवास : 29.08.2020)

हम सभी परिवारजन आपकी पुण्य तिथि सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती रामादेवी जैन
(पत्नी)

भ्राता :
श्री गणेशराम जैन

पुत्र :
अनिल कुमार जैन
सुनील कुमार जैन
विकास जैन

प्रपौत्र :
संजय, संभव, रोहित, आर्जव जैन
एवं समस्त पचेरिया परिवार

मै. अनिल ऑयल मिल्स
मै. सुनील ट्रेडर्स
मै. बापू ट्रेडर्स
मै. श्रीओम ऐसोसिएट अजमेर
मो.: 93039-26452
98291-68252

भगवान महावीर का धर्म परिवार कितना विशाल

बारह वर्ष की दीर्घ साधना के बाद महावीर केवली बन गए। भगवान जब अनंत ज्ञानी, अनंत दर्शनी, अनंत आनंदमय और अनंत वीर्यवान बन गए तो स्वतः उनका साधना काल भी समाप्त हो कर सिद्ध काल की मर्यादा में प्रतिष्ठित हो गया।

देवताओं ने केवल्य प्राप्ति के बाद धर्मोपदेश हेतु समवसरण की रचना की। भगवान का पहला प्रवचन देव परिषद् में हुआ।

देवता व्रत और संयम नही ग्रहण करते और तीर्थकर के प्रवचन की निष्पत्ति त्याग, व्रत और संगम स्वीकरण में होती है. अतः भगवान की प्रथम देशना निष्फल हुई।

भगवान जाम्भिय ग्राम से विहारकर मध्यम पावा पधारे. वहीं सोभिल नामक ब्राह्मण ने एक विराट यज्ञ का आयोजन कर रखा था, उस अनुष्ठान की पूर्ति के लिये वहां इंद्रभूति आदि प्रमुख 11 वेदविद ब्राह्मण अपने 4400 शिष्यों के साथ आए हुए थे। महावीर की जानकारी पाकर उनमें पांडित्य का भाव जागा महावीर को पराजित करने के लिए सबसे पहले इंद्रभूति अपनी शिष्य संपदा के साथ महावीर के समवसरण मे आए। उन्हें जीव के बारे में संदेह था। महावीर ने उनके प्रछन्न अप्रकाशित विचारों को स्वयं सामने ला दिया। इंद्रभूति सहम गए। महावीर के पवित्र ज्ञान ने उनकी अंतरात्मा को उनके के श्री चरणों में न केवल झुका दिया, अपितु उन्होंने अपने शिष्यों के साथ भगवान का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया, एक प्रकार से कह सकते हैं महावीर के अंतरंग में धर्म का श्रीगणेश हो गया।

इंद्रभूति की घटना सुन अन्य 10 पंडितों का भी पांडित्य भाव जागा और उनका भी समवसरण पहुंचने का क्रम शुरू हो गया। एक-एक कर सब पंडित आए और महावीर से प्रतिबुद्ध हो अपने शिष्यों के साथ महावीर का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया। इस प्रकार प्रथम अवसर पर ही श्रीगणेश के साथ महावीर का धर्म परिवार 4400 शिष्यों से समृद्ध हो गया।

महावीर ने इंद्रभूति आदि ग्यारह विद्वान शिष्यों को गणधर पद पर नियुक्त किया, यहीं से महावीर का धर्म परिवार विस्तार पाने लगा।

चंदनबाला आदि स्त्रियां साध्वी दीक्षा हेतु उपस्थित हुई, महावीर ने सभी को दीक्षित किया व महासती चंदनबाला को साध्वियों का नेतृत्व प्रभार सौंपा। स्त्रियों को साध्वी होने का अधिकार देना महावीर का विशिष्ट मनोबल था। वैदिक धर्म के सन्यासी स्त्री को दीक्षित करने के विरोधी थे। वैदिक ही क्यों महावीर के पीछे चालीस ही साल के बाद गौतम बुद्ध हुए, जिन्होंने स्त्रियों को सन्यास देना उचित नहीं समझा और जब बुद्ध ने अपने प्रमुख शिष्य के आग्रह पर एक स्त्री को दीक्षित किया तो कहा- हे आनंद! तेरे आग्रह और प्रेम के लिए यह काम कर रहा हूं लेकिन इससे अपने सम्प्रदाय के लिए खतरा मैने उठा लिया है। ये वाक्य गौतम बुद्ध ने कहे और वैसा परिणाम में आया भी। बौद्ध इतिहास इसका साक्षी है लेकिन महावीर निडर दिख पड़ते हैं, इस निडरता और सुदृढ़ व्यवस्था कौशल का ही परिणाम था कि महावीर धर्म परिवार में कुल 14000 साधु और 36000 साध्वियां थी, कछ लोग साध जीवन की दीक्षा लेने में समर्थ नहीं है किंतु समता धर्म में दीक्षित होना चाहते थे उन्हें महावीर ने अणुव्रत की दीक्षा दी, वे सभी मनुष्य श्रावक व स्त्रियां श्राविका कहलाए।

महावीर कोई स्वार्थवश स्वयं के कल्याण में प्रवृत्त नहीं थे न ही किसी अन्य अपेक्षा से, पर-कल्याण व धर्म परिवार के विस्तार को वो उद्यत हए थे, यह तो एक नीयत सिद्धांत का प्रश्न था, क्योंकि जो व्यक्ति स्वयं खाली है वह दूसरों को कैसे भरेगा? जिसके पास कुछ नहीं है वह दूसरों को क्या देगा? स्वयं विजेता बनकर ही दूसरों को विजयपथ दिखाया जा सकता है। स्वयं बुद्ध होकर ही दूसरों को बोध दिया जा सकता है। स्वयं जागृत होकर ही दूसरों को जगाया जा सकता है। महावीर स्वयं बुद्ध हो गए और दूसरों को बोध देने का अभियान शुरू कर गए, जब प्रभु की ज्ञान रश्मियों का वितरण प्रारम्भ हुआ तो अनेकानेक भव्य आत्माओं का सहज ही भगवान के धर्म परिवार के साथ जुड़ाव होता चला गया।

धर्म परिवार भी मानो कई गुणरत्नों का भंडार हो। रत्नों की चमक भी ऐसी, जिसने अपने युग में पूरी मानव जाति पर गहरा प्रभाव छोड़ा। हो सकता है कि इस अवसर्पिणी के बाकी 23 तीर्थकरों के धर्म परिवार के संख्या बल के सामने भगवान महावीर का धर्म परिवार कम या थोड़ा लगता हो पर वक्र जड़ प्रधान मनुष्यों में ऐसी भव्य आत्माओं का समागम ही अपने आप में शक्तिशाली धर्म प्रवर्तन का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

भगवान से प्रतिबुद्ध हुए उनके धर्म परिवार में 4000

साधु, 36000 साध्वियां, 459000 श्रावक, 38000 श्राविका थे। इनमें भी 700 केवलज्ञानी, 500 मनःपर्यवज्ञानी. 300 अवधिज्ञानी, 700 वैक्रियलब्धिधारी, 300 चतुर्दशपर्वधर. 400 चर्चावादी व 800 अनुत्तविमानगामी साधु हुए और महावीर के निर्वाण के बाद तो उनके धर्म ने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सापेक्ष और भी अधिक विस्तार पाया। गत 2600 से भी अधिक वर्षों में लाखों आत्माएं तीर्थकर महावीर के धर्म परिवार से जुड़ कर कल्याण को प्राप्त हुई। महावीर का धर्म परिवार मूलतः मगध और आस-पास के राज्यों तक सीमित था. आज वो न केवल भारतवर्ष अपितु विदेशों में भी दस्तक दे चुका है, इतना ही नहीं तीर्थकर महावीर का धर्मोपदेश हर युग में, हर काल में समाधान का संबोध साबित हो कर है।

भावों की उर्ध्वता और जीवत्व की भव्यता से परिचय कराने वाला महावीर का धर्म शासन निरन्तर वर्धमान बना रहे।

-मुनि अनेकान्तकुमार

मानव जीवन में मन, हृदय, आत्मा एवं वाणी का सम्मिश्रण

केवल सांसो के चलने से जीवन नहीं चला करता। जीवन के लिए शान्ति, शक्ति, सफलता की मनोदशा भी जरूरी है। जीवन में बाधाओं को पार करने के लिए धैर्य और साहस का दामन भी जरूरी है। उत्साह-उमंग भी अपनी आँखों में बसा कर रखिए ताकि मंजिल सदा तरोताजा रहे। प्रसन्नता का पेड़ लगाईए ताकि डाल पर चहचहाने के लिए रंग बिरंगी चिड़ियाँ अपनी मिठास बढाने के लिए खूबसूरत फल अपने आप आ जायेंगे।

लेकिन मनुष्य के जीवन का निर्माता उसका अपना ही मन है। मन मनुष्य के मुक्ति का द्वारा भी खोलता है तथा बन्धन की बेड़ियाँ भी मन बाँधता है। जब हम किसी भी कार्य को बेमन से करते हैं तो वह कार्य हमारे बन्धन तथा बेड़ी बन जाता है यदि उसी कार्य को विशुद्ध एवं मनोयोग पूर्वक सम्पादित किया जाए तो हमारे परमात्मा की प्रार्थना बन जाता है। दुख का दरिया भी मन है और सुख का सेतु भी। उसके अन्दर धर्म भी है और अधर्म भी। जीवन के निर्माण एवं गतिविधियों का मुखिया है। मन चंचल है, चलायमान है, दौड़ता है तो भी पवन वेग की तरह।

प्रभु की दिव्य ध्वनि में आता है कि मन को संयम-तप-आराधना-विनय-श्रृद्धा-भक्ति एवं उत्तम संस्कारों की डोरी से बाँध। सुकरात कहते हैं कि मन रोगाणुओं से लोहा लेने की क्षमता रखता है। हमारा मन ही हमें बिगाड़ता है, हमारा मन ही हमें सुधारता है। मन की दशा बदल जायेगी तो जीवन की दशा बदल जायेगी।

मन का मोह नहीं टूटा तो साधना बेकार है,
मन को नहीं जीता तो सब विजय हार है।
तुम तो अच्छी तरह समझते हो इस तथ्य को,
इस मन में ही होता सबसे बड़ा हा-हाकार है।

ध्यान करने - माला जपने - प्रभु अर्चना करने बैठो तो मन ज्यादा उछलकूद मचाता है, आपको उलझाए रखना चाहता है। स्मरण रहे तन की पवित्रता से नहीं, मन की पवित्रता से परमात्मा प्रसन्न होता है। मन की परीक्षा होती है, शरीर की नहीं। मन की उम्मीदों की लौ कभी बुझती नहीं। मन खराब हो तो बुरे शब्द अर्थात कटुवाणी न बोलें क्योंकि मन बदलने के मौके तो मिलेंगे, पर कटुवाणी बदलने के नहीं। जिसका मन शुद्ध नहीं वह कभी भी महान नहीं बन सकता। मन लोभी, मन कपटी, मन चोर है।

ध्यान रहे! माधुर्य वाणी चेहरे को शोभती है, हृदय की पवित्रता शरीर की सुन्दरता को बढ़ाता है, उर्जा, शक्ति, शान्ति एवं संयम की उत्पत्ति होती है। जिससे अनन्त रस स्वतः ही प्राप्त हो जाता है। क्या आपने कभी सोचा है - क्यों रोता बचपन, क्यों गुमराह होती जवानी, क्यों खिसकता बुढ़ापा, क्यों होती अकाल मृत्यु। सोचा ही होता तो क्यों भूलते सन्देश महावीर का। क्यों छोड़ते दामन अहिंसा का। आओ चलें महावीर की राह। महावीर को मत बांटिए। महावीर तो एक ही है अनेक नहीं।

मेरी आपसे अनुमोदना है कि जीवन को अनमोल धरोहर के रूप में व्यतीत करें। जीवन तो बुलबुले की भाँति क्षणिक है। इसमें सत्य, संयम, निष्ठा, साहस, धैर्य, उत्कर्ष, भक्ति, मधुभाषी अच्छे उत्तम संस्कार के दीपक जलाईए। ताकि दीपकों की रिमझिम रोशनी आपके जीवन को रोशन कर दे। आपके जीवन का भव्य प्रकाश सदैव प्रकाशित रहे। यही जीवन का सार है।

इस आकांक्षा की इच्छा है- बांटते रहो खुशी, जहां भी हो तुम, यहीं स्वर्ग मिल जायेगा जीते जी तुमको।

-आकांक्षा जैन *(एम.एस.सी.)*
महुआ रोड, मण्डावर, जिला दौसा

विधवा सहायता

★ **श्री रविन्द्र जी जैन,** मेसर्स बिशम्भर नाथ बंगाली मल ने अपनी पूज्य माताजी स्व. श्रीमती शकुन्तला देवी जी जैन की अन्तिम इच्छापूर्ती हेतु विधवा सहायता के लिए रु. 1,25,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4297)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन एवं श्री पंकज जी जैन,** 12-रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली-110077 ने विधवा सहायता हेतु रु. 6,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5005)*

★ **श्री राजेन्द्र कुमार-माया जी जैन,** 111, कंचन विहार अपार्टमेन्ट, साउथ तुकोगंज, इन्दौर ने अपने सुपुत्र चि. यश संग सौ.कां. साक्षी जैन के विवाह उपलक्ष्य पर विधवा सहायता हेतु रु. 6,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4296)*

★ **श्री जितेन्द्र कुमार-रेखा जी जैन,** उपाध्यक्ष महिला मंडल, 58ए/41, ज्योति नगर, खेरिया रोड, आगरा ने विधवा सहायता हेतु रु. 6,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5003)*

★ **श्री अरिहंत कुमार जी जैन** (महतोली वाले) 4, शिवा कॉलोनी, राम नगर, सोडाला, जयपुर ने अपने पूज्य पिताजी स्व. श्री रमेश चन्द्र जी जैन (रिटा. तहसीलदार) की प्रथम पुण्यतिथि पर विधवा सहायता हेतु रु. 2,100/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 4919)*

★ **श्री रमेश चन्द जी जैन एवं श्री पंकज जी जैन,** 12-रेलवे रोड, पालम कॉलोनी, नई दिल्ली-110077 ने विधवा सहायता हेतु रु. 5,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5007)*

★ **श्री जितेन्द्र कुमार-रेखा जी जैन,** उपाध्यक्ष महिला मंडल, 58ए/41, ज्योति नगर, खेरिया रोड, आगरा ने विधवा सहायता हेतु रु. 6,000/- सप्रेम भेंट किए। *(र.सं. 5004)*

पत्रिका सदस्यता

3134. Sh. Prakash Chand Ji Jain, Abhay Vidhya Mandir, Ward No. 16, Nursingh Colony, Kherli, Dist. Alwar-321606 *(CR D-2589)*

3135. Sh. Nitesh Kumar Ji Jain S/o Sh. Satyendra Kumar Jain, Flat No. G-1, Plot F, Evershine Residency, Vinayak Vihar, Jaipur-302020 *(CR D-2612)*

3136. Sh. Gaurav Ji Jain S/o Sh. Satish Jain, 504, Yashoda Residency, Galav Nagar, Bahodapur, Gwalior *(CR D-2504)*

3137. Sh. Neeraj Kumar Ji Jain, 28 Brij Vihar, Phase-3, Kamla Nagar, Agra-282005 *(CR D-2613)*

3138. Sh. Kaushal Ji Jain, Flat No. 204, Mahaveer Apartment, Gopi Nath Ki Puliya, Duttpura, Morena-476001 *(CR D-2614)*

शाखा समाचार

शाखा आगरा महिला मंडल

अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महिला मंडल आगरा शाखा के द्वारा एक परिवार को स्वरोजगार योजना के अंतर्गत उस परिवार को आटा चक्की प्रदान कर रोजगार का साधन सुलभ किया। पूर्व में भी आगरा महिला मंडल के रोजगार दिलाने के कार्य करती रही है। आगरा की महिला इकाई बहुत-बहुत बधाई की पात्र है, भविष्य में भी ऐसे ही कार्य करते रहे, ऐसी कामना के साथ आगरा शाखा की महिला इकाई को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं।

****

शाखा सवाई माधोपुर

पल्लीवाल जैन महासभा की शाखा सवाई माधोपुर की आमसभा की बैठक दि. 29.08.2021 को आयोजित की गयी, जिसमें बैठक एजेण्डे के अनुसार समाज के उपस्थित महानुभावों ने सर्व सम्मति से निम्नानुसार नवीन कार्यकारिणी का चुनाव/गठन किया गया। चुने गये पदाधिकारी/सदस्यों ने अपनी सहमति दर्शाते हुये समाज हित में कार्य करने हेतु आश्वस्त किया गया-

अध्यक्ष- श्री राजकुमार जैन, ***उपाध्यक्ष-*** श्री कमलेश जैन, ***मंत्री-*** श्री रिद्धि चन्द जैन, ***कोषाध्यक्ष-*** श्री सतीश जैन, ***सदस्य-*** श्री रमेश चन्द जैन, श्री विजय कुमार जैन, श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, श्री मुकेश जैन, श्री राकेश जैन, श्री सुमत प्रकाश जैन, श्री मनोज जैन, ***मनोनीत सदस्य-*** श्री कैलाश चन्द जैन, श्री सुरेश चन्द जैन।

मां का पल्लू

बीते समय की बातें हो चुकी है साहेब...

माँ के पल्लू का सिद्धाँत... माँ को गरिमामयी छवि प्रदान करने के लिए था...

इसके साथ ही... यह गरम बर्तन को चूल्हे से हटाते समय पकड़ने के काम भी आता था... पल्लू की बात ही निराली थी... पल्लू पर तो बहुत कुछ लिखा जा सकता है...

पल्लू... बच्चों का पसीना.. आँसू पोंछने... गंदे कान... मुँह की सफाई के लिए भी इस्तेमाल किया जाता था...

माँ इसको अपना हाथ पोंछने के लिए तौलिया के रूप में भी इस्तेमाल कर लेती थी... खाना खाने के बाद पल्लू से मुँह साफ करने का अपना ही आनंद होता था...

कभी आँख में दर्द होने पर... माँ अपने पल्लू को गोल बनाकर फूँक मारकर गरम करके आँख में लगा देतीं थी... दर्द उसी समय गायब हो जाता था...

माँ की गोद में सोने वाले बच्चों के लिए उसकी गोद गद्दा और उसका पल्लू चादर का काम करता था... जब भी कोई अंजान घर पर आता तो बच्चा उसे... माँ के पल्लू की ओट ले कर देखता था...

जब भी बच्चे को किसी बात पर शर्म आती... वो पल्लू से अपना मुँह ढँक कर छुप जाता था... जब बच्चों को बाहर जाना होता, तब 'माँ का पल्लू' एक मार्गदर्शक का काम करता था... जब तक बच्चे ने हाथ में पल्लू थाम रखा होता, तो सारी कायनात उसकी मुट्ठी में होती थी.... जब मौसम ठंडा होता था... माँ उसको अपने चारों ओर लपेट कर ठंड से बचाने की कोशिश करती... जब बारिश होती... माँ अपने पल्लू में ढाँक लेती...

पल्लू का उपयोग पेड़ों से गिरने वाले जामुन और मीठे सुगंधित फूलों को लाने के लिए किया जाता था...

पल्लू में धान, दान, प्रसाद भी संकलित किया जाता था...

पल्लू घर में रखे समान से धूल हटाने में भी बहुत सहायक होता था...

कभी कोई वस्तु खो जाए, तो एकदम से पल्लू में गांठ लगाकर निश्चिंत हो जाना...कि जल्द मिल जाएगी...

पल्लू में गाँठ लगा कर माँ एक चलता फिरता बैंक या तिजोरी रखती थी... और अगर...सब कुछ ठीक रहा, तो कभी-कभी उस बैंक से कुछ पैसे भी मिल जाते थे...

सच में मुझे आज भी मां का पल्लू याद आता है, मुझे नहीं लगता, कि विज्ञान या नई पीढ़ी इस पल्लू का विकल्प ढूँढ पाये...

पल्लू कुछ और नहीं, बल्कि एक जादुई एहसास है...

पुरानी पीढ़ी से संबंध रखने वाले अपनी माँ के इस प्यार और स्नेह को हमेशा महसूस करते हैं, जो कि आज की पीढ़ियों की समझ से शायद गायब है...

शोक संवेदना

श्रीमती जावित्री देवी जैन धर्मपत्नी श्री किशन चंद जैन (पेट्रोल पंप वाले) का स्वर्गवास दिनांक 03.09.2021 को 77 वर्ष की आयु में हो गया। आपने हर समय देव गुरु धर्म की शरण रखी, आपकी धार्मिक क्षेत्र सामाजिक क्षेत्र एवं पारिवारिक क्षेत्र में अनूठी पहचान थी। अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा वीर प्रभु से प्रार्थना करते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित करती है।

कहानी

आस-पास के बिखरे रिश्ते

खट खट.....खट खट.... दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनकर सावित्री बड़बड़ाई- कौन है, पता नहीं कौन है इतनी रात गए और बड़बड़ाते हुए दरवाजे के बीच बने झरोखे से झांककर देखा, अरे रमा तुम ! इतनी रात गए जानती भी हो दो बज रहे हैं, क्या है?

रमा ने कहा- आंटीजी वो....वो बाबूजी की तबीयत खराब हो रही है उन्हें बड़े अस्पताल लेकर जाना होगा। आंटीजी आप अंकलजी से कहिए ना वो अपनी गाड़ी से उन्हें.....

बात बीच में काटते हुए सावित्री देवी बोली- बेटा वो.. इनकी भी तबीयत खराब है बड़ी मुश्किल से दवाई देकर सुलाया है, ऊपर से गाड़ी भी ठीक नहीं है, तो तुम चौक पर चली जाओ वहां कोई आटो टैक्सी मिल जाएगी।

क्या, चौक पर..... रमा की आँखें भीगी हुई थी। रात दो बजे चौक पर..... मां बाबूजी ने कभी आठ बजे के बाद घर से नहीं निकलने दिया। कारण, अक्सर मां बाबूजी उसे समझाते रहते थे कि बेटा ये वक्त आसामाजिक तत्वों के बाहर घूमते हुए शिकार करने का ज्यादा होता है। लेकिन आज....आज तो मुझे जाना ही होगा। मां को ढाढस बंधाकर आई हूं, मुझे बेटी नहीं बेटा मानते हैं मेरे मां बाबूजी तो मैं कैसे पीछे हट सकती हूं।

लेकिन मन में अक्सर अकेली लड़कियों के साथ होती वारदातों की खबरें रमा के मन की आशंकाओं को और बढा रही थी, वो हिम्मत करते हुए अपनी गली से बाहर सडक की ओर जाने लगी....

अरे रुको....कौन हो तुम....

रमा को पीछे से आवाज सुनाई दी....

रमा ने घबराकर पीछे की ओर देखा तो गली के नुक्कड़ पर महीने भर पहले रहने आए नये पड़ौसी जोकि रिक्शा चलाते हैं, उनको खड़ा पाया। वो बोले- अरे, तुम तो हमारी गली के दीनानाथ भैया की बिटिया हो ना, कहां जा रही हो इतनी रात गए।

रमा ने बताया- काका वो....बाबूजी की तबीयत खराब है अस्पताल लेकर जाना है कोई सवारी ढूंढने.....

क्या....दीनानाथ भैया की तबीयत खराब है बिटिया तुम घर चलो, कहकर वह जंजीर से बंधे अपने रिक्शा को खोलने लगा....

रमा तुरन्त घर पहुंची, बाबूजी को सहारा देकर उठाने की कोशिश कर ही रही थी कि रिक्शेवाले काका अंदर आ गए.... बोले...आओ दीनानाथ भैया....सहारा देते हुए दीनानाथ जी को पकड़ते हुए रिक्शे वाले ने कहा- अरे बिटिया....भाभीजी.... कुछ नहीं है, सब ठीक है...अभी डाक्टर के पास पहुंच जाएंगे।

पिछली सीट पर तीनों को बिठाकर रिक्शे पर तेजी से पैडल मारकर खींचने लगा। अस्पताल पहुंचकर रमा के साथ-साथ डाक्टरों के आगे-पीछे भागते हुए दीनानाथ जी को भर्ती कराया।

देखिए थोड़ा बीपी बढ़ा हुआ था.....डाक्टर ने उन्हें दवाओं सहित थोड़ा आराम करने के लिए कहा।

बेड के पास बैठी रमा को शाम की वो तस्वीरें आँखों के आगे नजर आ रही थी जब बगलवाली सावित्री आंटी अंकलजी के साथ खिलखिलाकर गाड़ी से उतरी थीं, तब ना तो गाड़ी खराब थी और ना ही अंकलजी की तबीयत....बस.....

देखिए ये इंजेक्शन मंगवा लीजिए डाक्टर ने एक पर्ची रमा की ओर बढाते हुए कहा। यहां लाइए डाक्टर साहब....कहकर रिक्शा वाले ने पर्ची पकड़ ली। तुम मम्मी-पापा के साथ रहो हम अभी लेकर आए बिटिया और वह बाहर की ओर तेजी से निकल गये।

रमा एकटक उसकी ओर देखती रही। एक छोटे से मकान में रहने वाला ये रिक्शा वाला काका....गली में सभी के घर दो-तीन मंजिला थे। सभी के घरों में मार्बल पत्थरों की सजावट थी, तो किसी के यहां टाइल्स की....बस वही एक घर अजीब सा लगता था, झोपड़ीनुमा सीमेंट की चद्दरों से ढका हुआ।

कुछ ही देर में....लो डाक्टर साहब....अचानक रिक्शे वाले की आवाज ने उसकी तंद्रा भंग की। डाक्टर ने इंजेक्शन लगाया और आराम करने के लिए कहकर चला गया। सुबह छः बजे तक डाक्टर ने चार बार बीपी चेक किया तकरीबन सभी समय सुधार था सो डाक्टरों ने दीनानाथ जी को घर जाने की अनुमति दे दी। वापसी भी रिक्शे पर लेकर रिक्शा वाला बड़ी सावधानी से घर तक छोड़कर जैसे ही चलने को हुआ रमा ने बटुआ निकालकर पांच सौ का नोट उनकी और बढाया....लीजिए काका....

ये क्या कर रही हो बिटिया, हम इन सब कामों के पैसे के लिए नहीं लेते।

मतलब....ये तो आपका काम है ना काका....लीजिए ...

बिटिया....हमारे परिवार के जीवन यापन के लिए हम सुबह से शाम तक उस ऊपर वाले की दया से मेहनत करके कमा लेते हैं, ज्यादा का लालच नहीं। वो इंतजाम किए देता है हमारे पेट का और वैसे भी हम एक गली में रहते हैं ऐसे हम और आप पड़ोसी हुए और वो पड़ोसी किस काम का जो ऐसी स्थिति में भी साथ ना हो.....कहकर रमा के सिर पर हाथ रखकर वो चला गया।

रमा भीगी हुई आँखें पोंछते हुए ऊपर वाले की ओर देखकर बोली- आप जैसे भगवान रुपी पड़ोसी ईश्वर हर घर के पास रहें।

आज की दुनिया में हमारे आस-पास सावित्री और रिक्शेवाले काका जैसे बहुत से रिश्ते बिखरे हुए हैं लेकिन सबकी सोच अलग-अलग है। कोई फर्ज निभाता है तो कोई दर्द देता है।

भावभीनी श्रृद्धांजलि

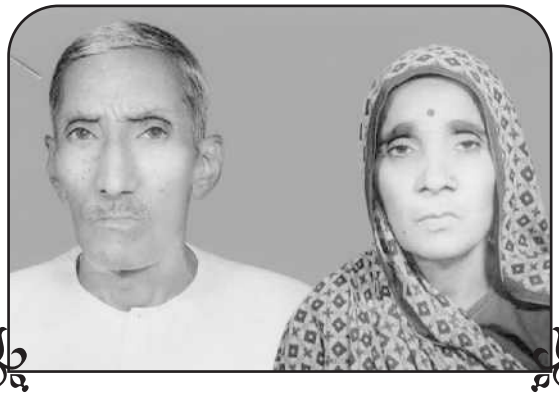

पूजनीय पिताजी स्व. श्री प्यारेलाल जी जैन चौधरी
श्रद्धेय माताजी स्व. श्रीमती असरफी देवी जी जैन
(मूल निवासी - मौजपुर, अलवर)

स्व. श्रीमती इन्दु जी जैन
(धर्मपत्नी श्री पदम चन्द जैन)
(स्वर्गवास : 30.12.2018)

हम सभी परिवार के सदस्य सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये भगवान वीर से उनकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र :
पदम चन्द जैन

पौत्र-पौत्रवधु :
पारस जैन-रश्मि जैन,

पौत्री-दामाद :
डिम्पल-राजेश जैन
सिम्पल-नितिन जैन
प्रिती-उत्तम कोठारी

पड़पोत्री-पौत्र :
चेल्सी जैन-अक्षत जैन

पुत्र :
अनूप चन्द जैन

पौत्र-पौत्रवधु :
हेमन्त जैन-मधु जैन

पौत्री-दामाद :
सुनिता-सुनिल
अनिता-परवेश
विनिता-प्रताप

पड़पौत्र :
रोबीन-मानस

निवास :
बी-52, कीर्ति नगर, टोंक रोड, जयपुर
फोन : 0141-2706317, 9829066317, 9414055855

उत्तम क्षमा -महा महोत्सव पर्व

हे भव्य आत्मन-

क्षमा करना - क्षमा पाना जीवन का सार्थक अर्थ है- जीवन आनन्दिक होना, जीवन में अमृतरस घुल जाना, जीवन का आभूषण है, जीवन को सरस बनाने का धार्मिक उर्जा है। सुख-शान्ति-चमन का सौहार्द उपकरण है। कण्ठ का अनुपम हार है। मन को संयम में रखने का चाबुक है। हृदय की वाणी का कल्पवृक्ष है। जीवन के व्यक्तित्व की पोशाक है। आत्मा का तप है। कोमल नेत्रों के द्वारा निर्मल धारा बहाने का स्रोत्र है। इतना ही नहीं बल्कि रोम-रोम के छिद्रों को पवित्र करने की संजीवनी है। अनेकानेक गुणात्मक के कारण ही साथ में उत्तम शब्द का प्रयोग होता - उत्तम क्षमा - तभी तो कहते हैं क्षमा वीरस्य भूषणम्। क्षमा मोक्ष का द्वार है।

हे भव्य जीवरत्न-

धधकती एवं भभकती जीवन की ज्वाला को शान्त करने का अनुपम टॉनिक है हृदय को सुरभित एवं सुगन्धित बनाने की पुष्पकली है। क्षमा अर्न्तमन से उपजती है और नाभि के अमृत रस में घुलती हुई, रोम-रोम को पवित्र करती हुई कंठताल से, कोमल ध्वनि के साथ, शब्दों के पुष्प बिखेरते हुए बाहर निकलती है। तब इसकी मधुर गूंज गगन मण्डल की लालिमा में घुलती हुई जन-जन की आत्मा में प्रवेश कर देती है। यही है सरस जीवन।

हे सुखान्त आत्मजन-

जैसे ही क्षमावाणी का अमृत घोल आत्मा में प्रवेश हुआ वैसे ही सानन्द-आनन्द-उल्लास-उत्साह-स्नेह-सुख-शान्ति-वात्सल्य के पुष्प खिल जायेंगे। जीवन परिवार सहित आनन्दित होगा। क्षमा की वाणी आन्तरिक भावों के दरवाजा खोलती हुई नमन से उपजता है, विनय भाव से प्रकट होता है, श्रृद्धा के भावों में घुल जाता है तथा आन्तरिक गहराईयों से निकलता है। अन्तरात्मा से अनुकम्पा फूटती है, अनुकम्पा क्षमा का रास्ता खोलती है। क्षमा जीवन का बसन्त है और जीवन का मधुमय संगीत। क्षमा मधुर भावों की सुगन्धित वाटिका है जिसमें खिलते रहते हैं अनेकानेक पुष्प- शालीनता, अहिंसा, सत्यता, निर्मलता, दक्षता, अपनत्व, आत्मीयता, स्नेहमयी, सुख, शान्ति, करूणा।

हे श्रेष्ठिजन-

करूणा हमें अंधेरे से उजाले की ओर ले जाती है। आवश्यकता है भाव जागरण की। क्षमा की अमृतवाणी जीवन को जगमगा देती है दीपावली की रोशनी की तरह। आप अध्ययनरत रहिए- जैन साहित्य, जैन दर्शन, जैन पुराण, जिन वाणियाँ आदि-आदि। जीव दया और उत्तम क्षमा एक सिक्के के दो पहलू हैं। आज भी जगमगा रहा है जीवन जिनके हृदय में क्षमा बोलती थी तथा आन्तरिक भावों के उद्गार :-

क्षमा आत्मा का तप है, यह कांटों में भी खिलता है
खिलता फूल महक सहित, प्रभु के चरणों में चढ़ता है
क्षमा के अश्रु मोती बन कर गले की शोभा बन जाए
रोम-रोम खिल जाए तुम्हारा, स्वर्ग जमीं पर उतर आये
महक उठेगी दुनिया सारी, यदि क्षमा के फूल खिला दोगे
बैर-विरोध मिटाकर मन के अन्तर स्नेह दीप जला दोगे
क्षमा की अमृतवाणी से, परसाद मिलेगा सुख शान्ति का
महापर्व है आज क्षमा का मैल निकालो अपने मन का
दिव्य बने जीवन आपका, अनुपम हो आपकी साधना
सफल हो हमारी भव्य भावना यही है हमारी आराधना
क्षमा करें और क्षमा मांग लें प्रेम जीत है इसमें हार नहीं
क्षमा वीरों का भूषण है, यह कायर का व्यवहार नहीं
क्षमा करें नहीं, क्षमा न मांगे, द्वेष भाव तब तक रहता
क्षमा दान देने लेने से स्नेह सलिल निशदिन बहता

हे सत्य पुरुष-

क्षमा की अमृत की बूंदों की झलक जिनमें महक रही है जीवन भविष्य की स्मृतियां। ये हृदय की आन्तरिक गहराईयों से उपजे इस धरा के शिरोमणि कोहिनूर हीरे की तरह चमक रहे हैं।

1. ईशा-मसीह को क्रुस पर लटकाया तब हृदय के अन्दर क्षमा बोलती है कि हे ईश्वर इन्हें माफकर देना, ये लोग नहीं जानते हैं ये क्या कर रहे हैं।

2. पैगम्बर मोहम्मद ने अपने चाचा की हत्या करने वाली औरत को क्षमा कर दिया था।

3. कृष्ण ने शिशुपाल को सौ बार गाली देने पर भी माफ कर दिया तथा सरयू नदी के किनारे पर जरद नाम के शिकारी द्वारा तीर बाण से मार देने पर भी माफ कर दिया तथा भाग जाने के लिए कहा।

4. महावीर स्वामी ने ग्वाले के द्वारा कानों में कीलें ठोकने पर भी ग्वाले को तथा नागराज चण्डकौशिक को विष पान के बदले अमृतपान कराया।

5. पार्श्वनाथ ने कुमठ (नाम संवर देव) को उपसर्ग करने पर क्षमा कर दिया।

6. गजकुमार मुनि, सुकुमाल मुनि, सुकौशल मुनि, गुरुदत्त मुनि आदियों ने उपसर्ग होने पर भी क्षमा का दान दिया। अनेकानेक प्रकरण मिलेंगे- शास्त्रों-पुराणों तथा इतिहास के पन्नों में। आप भी बिखेरते रहिए क्षमा के पुष्प मेरे मधुबन में। उत्तम क्षमा सभी से - उत्तम क्षमा सभी के लिए।

-प्रेम कुमारी जैन
हरसाना (शाह परिवार)

प्रेम का महत्व

एक दिन एक आदमी एक बहुत बड़े साधु के पास जाकर दुखी मन से बोला कि बाबा, मैं अपने स्वभाव से बहुत परेशान हो गया हूँ। मैं जहाँ भी जाता हूँ, मेरा लोगों से मनमुटाव या झगड़ा हो जाता है। किसी से भी मेरी पटती नहीं है, इसलिए मैं हमेशा बहुत निराश रहता हूँ। मैंने लोगों से आपके बारे में बहुत सुना है और अब देख भी रहा हूँ कि आप इतने शान्त रहते हैं। मुझे भी कृपया अपने जैसा ही बना दें और कुछ उपाय बताएं जिससे मैं भी अपने आप को बदल सकूँ। यह सुनकर साधु बाबा दुःखी हो गये और चुपचाप उस आदमी से कुछ दूर हटकर बैठ गए। वह व्यक्ति फिर उनके नजदीक जाकर बोला...बाबा, क्या हुआ, मुझ पर दया करके मुझें कुछ उपाय बताएं। साधु ने कहा.... देखो भाई, अभी-अभी मैंने अपनी साधना के बल पर ये जाना है कि अब तुम्हारा जीवन सिर्फ 15 दिन का बचा है। इसके बाद तुम इस लोक में नहीं रहोगे। यदि मेरी मानो तो तुम्हारे पास सिर्फ़ 15 दिन ही शेष हैं अपना जीवन व अपने आप को बदलने के लिए। इन दिनों में सबको प्यार बांटो, किसी से दुर्भावना मत रखो, सबसे अपनी गलतियों के लिए क्षमा मांग लो। अपने माँ-बाप की खूब सेवा करो। अपनी पत्नी बच्चों के साथ अच्छे से अधिक से अधिक समय बिताओ। किसी से भी मिलो तो प्यार से बातें करो और जरूरतमंद लोगों के काम आओ। भूलकर भी गुस्सा मत करो। किसी से नफ़रत या द्वेष भी बिलकुल मत रखो।

साधु बाबा की बातें सुनकर वह व्यक्ति बहुत निराश हो गया पर उसको साधु की बात अच्छी लगी और वो समझ गया कि उसके पास समय बहुत कम है इसलिए इतने दिनों में सबको खुश भी करना हैं। उसके बाद वह आदमी वहाँ से चला गया और साधु के निर्देश के मुताबिक आचरण करने लगा।

15वें दिन आकर वह आदमी साधु के चरणों में गिर गया और बहुत निराश होकर बोला... बाबा, मैंने सोचा कि आज मेरे जीवन का आख़री दिन है तो आपके भी दर्शन कर लूं और आपको धन्यवाद भी दे दूँ।

साधु ने कहा पहले ये बताओं की ये 15 दिन तुमने कैसे गुजारे? तुमने कैसा जीवन व्यतीत किया? वह व्यक्ति बोला...बाबा, अब मैं बिल्कुल सब बदल गया हूँ, जो लोग मुझसे नफरत करते थे वो भी मुझसे प्यार करने लगे। मेरे घर में भी सब मुझसे अच्छे से व्यवहार करने लगे। इतने दिन में मेरा ना तो किसी से झगड़ा हुआ ना ही मुझे किसी की बात का बुरा लगा, क्योंकि मुझे मालुम था कि सिर्फ़ कुछ दिन ही तो जीना है फिर क्यों किसी से झगड़ा या नफरत करूँ और मैंने सब से क्षमा माँग ली और देखो आज मैं भी खुश हूँ और लोग भी मुझसे खुश हैं। जो जीवन मैं जिंदगी भर नहीं जी पाया, मुझे ऐसा लगता हैं मैंने ये सिर्फ़ 15 दिनों में जी लिया। आज मैंने प्रेम के महत्व को समझ लिया। इसलिए बाबा मैं आपका धन्यवाद करने चला आया। साथ में मेरी ये भी इच्छा है कि आप मेरे घर परिवार को भी अपना बहुत आशीर्वाद दें ताकि मेरे न रहने पर वे सुखी रहें।

आदमी की सारी बातों को सुनकर साधु बोले..देखो भाई तुम अभी मरने वाले नहीं हो। मैंने तो तुम्हारे 15 दिन जीवन के शेष इसलिए कहा था ताकि तुम अंदर से खुद को बदल लो क्योंकि मैं तो सिर्फ एक दिन की ही जिंदगी मानकर जिता हूँ ताकि मैं भूलकर भी किसी का दिल ना दुखा दूँ।

डॉ. अनुपम जैन अभिनन्दन समारोह एवं अनुपम गणितज्ञ ग्रन्थ समर्पण समारोह

डॉ. अनुपम जैन अभिनन्दन समारोह एवं अनुपम गणितज्ञ ग्रन्थ समर्पण समारोह दिनांक 05 सितम्बर 2021 को दिल्ली में कोरोना के नियमों का पालन करते हुए विशेष अथितियों के सानिध्य में संम्पन हुआ। प्रमुख रूप से 105 गणनी आर्यिका ज्ञानमती माताजी ससंघ एवं आचार्य अनेकान्त सागर महाराज ससंघ विराजमान थे मुख्य अतिथि श्री रामनिवास गोयल (विधानसभा अध्यक्ष दिल्ली), श्री सुरेश जैन (कुलाधिपति टी.एम.यु. मुरादाबाद)

सारस्वत अथिति के रूप में प्रो. वी.के. जैन-तेजपुर (कुलपति-असम केन्द्रीय वि.वि.), प्रो. रेणू जैन-इंदौर (कुलपति-देवी अहिल्या वि.वि.), प्रो. संजीव जैन (मनोनीत कुलपति-जम्मू केन्द्रीय वि.वि., जम्मू), प्रो. मनोज दीक्षित-अयोध्या (पूर्व कुलपति-डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध वि.वि.), प्रो. राजीव जैन-जयपुर (कुलपति-राजस्थान वि.वि.), प्रो. पी.के. जैन-पटना (निदेशक-एन.आई.टी. पटना), प्रो. रजनीश जैन-दिल्ली (सचिव वि.वि. अनुदान आयोग), प्रो. नरेन्द्र धाकड़-इंदौर (पूर्व कुलपति-देवी अहिल्या वि.वि.) उपस्थित थे। भव्य समारोह में अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा के पूर्व अध्यक्ष श्री सुमत प्रकाश जैन इंदौर, महामंत्री श्री राजीव रतन जैन इंदौर, केंद्रीय कार्यकरणी सदस्य श्री विनोद कुमार जैन दिल्ली, दिल्ली शाखा के पूर्व अध्यक्ष श्री विजय कुमार जैन दिल्ली, श्री स्वेताशु जैन दिल्ली द्वारा डॉ. अनुपम जी जैन का माला, शॉल, श्रीफल, दुपट्टा, कलम, लॉकिट, प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया।

QUALITY WORKS • PROMPT SERVICE • COMPETITIVE RATES

PRODUCTS :
Transmission Line Towers (HT&LT), Telecom Towers, Wind Mill Structures, Sub-Station Structures, Lattice Structures, RSJ Poles & GI Earthing Strips.

FULLY EQUIPPED ULTRA MODERN FABRICATION AND GALVANIZING PLANT WITH EOT CRANES, HOISTS, POWER TROLLEYS, TESTING LABS & ETP SYSTEM TO ENSURE GREEN ENVIRONMENT

Fabrication & Galvanizing done as per
IS, BIS, ASTM, DIN & ISO Standards
Bath Size : 9m (L) x 0.8m (W) x 1.4m (D)
Plant Capacity : 18000 Tons / Year

Vijay Transmission PVT. LTD.

Vijay Transmission
PVT. LTD.

Plant :
PNH No. 100, Village Kanhera, Block Dharsiva, Uria Acholi Marg, Dist. Raipur-492001
Tel.: (0771) 305 4900 • Fax : (0771) 232 3162

Corporate Office :
210, 211, 2nd Floor, Kamla Space, S.V. Road, Santacruz (West), Mumbai-400054
Tel.: 022-262183401 • Fax : +91-022-26609915
E-mail : info@vijaytransmission.com

भावभीनी श्रद्धांजलि

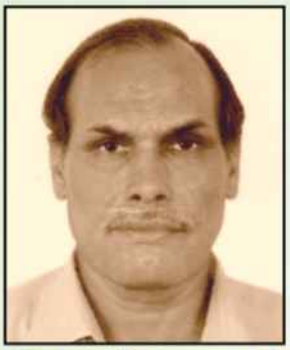

स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन

(सुपुत्र स्व. श्री हरीशचन्द्र जी जैन)

(पुण्यतिथि : 21.5.2017)

स्व. ई. श्री मोहित कुमार जी जैन

(सुपुत्र स्व. श्री महावीर प्रसाद जी जैन)

(पुण्यतिथि : 9.8.2018)

हम आपको सादर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए
भगवान वीर से आपकी चिर आत्मीय शांति की प्रार्थना करते हैं।

श्रद्धावनत

श्रीमती मिथलेश जैन
(धर्मपत्नी)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(पुत्री-दामाद)

श्रीमती मिथलेश जैन
(माँ)
डॉ. मेघा जैन-डॉ. पीयूष जैन
(बहन-बहनोई)

मोहित कुमार जैन ट्रस्ट (पंजि.)

ए/165, पालम एक्सटेंशन, सेक्टर 7, द्वारका, नई दिल्ली-110077
दूरभाष : 9599660709, 9599230509

प्रथम पुण्यतिथि पर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

हमारे पूज्यनीय

स्व. श्री नन्द किशोर जी जैन

(से.नि. प्रशासनिक अधिकारी)

(भूतपूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा, शाखा जयपुर)

(स्वर्गवास : 13.10.2020)

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, सेवा भावना, धर्म के प्रति आस्था एवं प्रेरणा दायक चरित्र हमारी स्मृति में सदा रहेगा एवं सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। हम सभी परिजन आपको शत्-शत् नमन करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
सुधीर-रेनू
(IFS)
विपिन-बीना
(Gemcentre) (MHS)
साधना धर्मपत्नी श्री अरूण

पौत्र, पौत्री :
सौरभ, राहुल, नैंसी

पौत्री-पौत्री दामाद :
स्वाति-हितेष

पुत्री-दामाद :
सुधा-राजेश

नवासे :
मनीष-मोनिका
प्रशांत-प्रियंका
(ग्वालियर)

निवास

एस-37, वसुंधरा कॉलोनी, टोंक रोड, जयपुर, मो.: 9414068657, 9929777779

With Best Compliments From

Authorised Distributor for

- ★ Johnson & Johnson Ltd.
- ★ SD. BIO SENSOR
- ★ Ortho Clinical Diagnostics
- ★ Lifescan-Division, for one touch Brand Glucometers & Strips.
- ★ Biorad Laboratories
- ★ Alere Medical
- ★ Transasia Biomedical Ltd.
- ★ LILAC Medicare

Sanjay Jain - Rajeev Jain

S.R. Enterprises

223, Bichoon Market, Kishanpole Bazar, Jaipur-302 003
Ph.: (O) 2322089, 2323903 (R) 2546017 • Fax : 0141-4022089
(M) +91-98290 12628, 94140 76265

कहानी बड़ी सुहानी

हीरे की खान

अफ्रीका महाद्वीप में हीरों की कई खानों की खोज हो चुकी थी, जहाँ से बहुतायत में हीरे प्राप्त हुए थे। वहाँ के एक गाँव में रहने वाला किसान अक्सर उन लोगों की कहानियाँ सुना करता था, जिन्होंने हीरों की खान खोजकर अच्छे पैसे कमाये और अमीर बन गए। वह भी हीरे की खान खोजकर अमीर बनना चाहता था।

एक दिन अमीर बनने के सपने को साकार करने के लिए उसने अपना खेत बेच दिया और हीरों की खान की खोज में निकल पड़ा। अफ्रीका के लगभग सभी स्थान छान मारने के बाद भी उसे हीरों का कुछ पता नहीं चला। समय गुजरने के साथ उसका मनोबल गिरने लगा। उसे अपना अमीर बनने का सपना टूटता दिखाई देने लगा। वह इतना हताश हो गया कि उसके जीने की इच्छा ही समाप्त हो गई और एक दिन उसने नदी में कूदकर अपनी जान दे दी। इस दौरान दूसरा किसान, जिसने पहले किसान से उसका खेत खरीदा था, एक दिन उसी खेत के मध्य बहती छोटी नदी पर गया। सहसा उसे नदी के पानी में से इंद्रधनुषी प्रकाश फूटता दिखाई पड़ा। उसने ध्यान से देखा, तो पाया कि नदी के किनारे एक पत्थर पर सूर्य की किरणें पड़ने से वह चमक रहा था। किसान ने झुककर वह पत्थर उठा लिया और घर ले आया।

वह एक खूबसूरत पत्थर था। उसने सोचा कि यह सजावट के काम आएगा और उसने उसे घर पर ही सजा लिया। कई दिनों तक वह पत्थर उसके घर पर सजा रहा। एक दिन उसके घर उसका एक मित्र आया। उसने जब वह पत्थर देखा, तो हैरान रह गया।

उसने किसान से पूछा, मित्र ! तुम इस पत्थर की कीमत जानते हो? किसान ने जवाब दिया, नहीं। मेरे ख्याल से ये हीरा है। शायद अब तक खोजे गए हीरों में सबसे बड़ा हीरा। मित्र बोला।

किसान के लिए इस बात पर यकीन करना मुश्किल था। उसने अपने मित्र को बताया कि उसे यह पत्थर अपने खेत की नदी के किनारे मिला है। वहाँ ऐसे और भी पत्थर हो सकते हैं।

दोनों खेत पहुँचे और वहाँ से कुछ पत्थर नमूने के तौर पर चुन लिए। फिर उन्हें जाँच के लिए भेज दिया। जब जाँच रिपोर्ट आयी, तो किसान के मित्र की बात सच निकली। वे पत्थर हीरे ही थे। उस खेत में हीरों का भंडार था। वह उस समय तक खोजी गई सबसे कीमती हीरे की खदान थी। उसका खदान का नाम 'किम्बर्ले डायमंड माइन्स' है। दूसरा किसान उस खदान की वजह से मालामाल हो गया।

पहला किसान अफ्रीका में दर-दर भटका और अंत में जान दे दी। जबकि हीरे की खान उसके अपने खेत में उसके पैरों तले थी।

शिक्षा:- इस प्रसंग में हीरे पहले किसान के पैरों तले ही थे, लेकिन वह उन्हें पहचान नहीं पाया और उनकी खोज में भटकता रहा। ठीक वैसे ही हम भी सफलता प्राप्ति के लिए अच्छे अवसरों की तलाश में भटकते रहते हैं। हम उन अवसरों को पहचान नहीं पाते या पहचानकर भी महत्व नहीं देते, जो हमारे आस-पास ही छुपे रहते हैं। जीवन में सफ़ल होना है, तो आवश्यकता है बुद्धिमानी और परख से उन अवसरों को पहचानने की और धैर्य से अनवरत कार्य करने की, सफ़लता निश्चित है।

* * * * *

आत्म मूल्यांकन

कसाई के पीछे घिसटती जा रही बकरी ने सामने से आ रहे संन्यासी को देखा तो उसकी उम्मीद बढ़ी। मौत आँखों में लिए वह फरियाद करने लगी- 'महाराज ! मेरे छोटे-छोटे मेमने हैं। आप इस कसाई से मेरी प्राण-रक्षा करें। मैं जब तक जियूंगी, अपने बच्चों के हिस्से का दूध आपको पिलाती रहूंगी।

बकरी की करुण पुकार का संन्यासी पर कोई असर न पड़ा। वह निर्लिप्त भाव से बोला- 'मूर्ख, बकरी क्या तू नहीं जानती कि मैं एक संन्यासी हूँ। जीवन-मृत्यु, हर्ष-शोक, मोह-माया से परे, हर प्राणी को एक न एक दिन तो मरना ही है। समझ ले कि तेरी मौत इस कसाई के हाथों लिखी है। यदि यह पाप करेगा तो ईश्वर इसे भी दंडित करेगा।

मेरे बिना मेरे मेमने जीते-जी मर जाएंगे, बकरी यह कहकर रोने लगी।

तुम मूर्ख हो, रोने से बेहतर है कि भगवान का नाम लिया जाए। याद रखें, मृत्यु नए जीवन का द्वार है। सांसारिक संबंध मोह का परिणाम है, संत ने उपदेश दिया।

बकरी निराश हो गई।

पास में खड़े एक कुत्ता जो पूरे दृश्य से अवगत था, उसने पूछा- संन्यासी महाराज, क्या आप मोह-माया से पूरी तरह मुक्त हो चुके हैं?

लपककर संन्यासी ने जवाब दिया- 'बिलकुल, भरा-पूरा परिवार था मेरा। सुंदर पत्नी, सुशील भाई-बहन, माता-पिता, चाचा-ताऊ, बेटा-बेटी। बेशुमार जमीन-जायदाद। मैं एक ही झटके में सब कुछ छोड़कर परमात्मा की शरण में चला आया। सांसारिक प्रलोभनों से बहुत ऊपर, सब कुछ छोड़ आया हूँ। मोह-माया का यह निरर्थक संसार छोड़ आया हूँ, जैसे कीचड़ में कमल। संन्यासी डींग मारने लगा।

कुत्ते ने समझाया- आप चाहें तो बकरी की प्राणरक्षा कर

सकते हैं। कसाई आपकी बात नहीं टालेगा। एक जीव की रक्षा हो जाए तो कितना उत्तम हो।

संन्यासी ने कुत्ते को जीवन का सार समझाना शुरू कर दिया- 'मौत तो निश्चित ही है, आज नहीं तो कल, हर प्राणी को मरना है। इसकी चिंता में व्यर्थ स्वयं को कष्ट देता है जीव।' संन्यासी को लग रहा था कि वह उसे संसार के मोह-माया से मुक्त कर रहा है।

अभी संन्यासी अपना ज्ञान बघार ही रहा था कि तभी सामने एक काला भुजंग नाग फन फैलाए दिखाई पड़ा। वह संन्यासी पर न जाने क्यों कुपित था। मानों ठान रखा हो कि आज तो तूझे डंसूगा ही।

सांप को देखकर संन्यासी के पसीने छूटने लगे। मोह-मुक्ति का प्रवचन देने वाले संन्यासी ने कुत्ते की ओर मदद के लिए देखा।

कुत्ते की हंसी छूट गई। 'संन्यासी महोदय मृत्यु तो नए जीवन का द्वार है। उसको एक न एक दिन तो आना ही है, फिर चिंता क्या? कुत्ते ने संन्यासी के वचन दोहरा दिए।

'इस नाग से मुझे बचाओ।' अपना ही उपदेश भूलकर संन्यासी गिड़गिड़ाने लगा। मगर कुत्ते ने उसकी ओर ध्यान न दिया।

कुत्ते ने चुटकी ली- 'आप अभी यमराज से बातें करें। जीना तो बकरी चाहती है। इससे पहले कि कसाई उसको लेकर दूर निकल जाए, मुझे अपना कर्तव्य पूरा करना है।

इतना कहते हुए कुत्ता छलांग लगाकर नाग के दूसरी ओर पहुँच गया। फिर दौड़ते हुए कसाई के पास पहुँचा और उस पर टूट पड़ा।

आकस्मिक हमले से कसाई संभल नहीं पाया और घबराकर इधर-उधर भागने लगा। बकरी की पकड़ ढीली हुई तो वह जंगल में गायब हो गई।

कसाई से निपटने के बाद कुत्ते ने संन्यासी की ओर देखा। संन्यासी अभी भी 'मौत' के आगे कांप रहा था।

कुत्ते का मन हुआ कि संन्यासी को उसके हाल पर छोड़कर आगे बढ़ जाए लेकिन अंतरात्मा की आवाज नहीं मानी। वह दौड़कर विषधर के पीछे पहुँचा और पूंछ पकड़ कर झाड़ियों की ओर उछाल दिया।

संन्यासी की जान में जान आई। वह आभार से भरे नेत्रों से कुत्ते को देखने लगा।

कुत्ता बोला- 'महाराज, जहाँ तक मैं समझता हूँ , मौत से वही ज्यादा डरते हैं, जो केवल अपने लिए जीते हैं।

एक इंसान और एक जानवर में क्या अंतर है जो केवल अपनी परवाह करता है? जानवर भी दूसरों का ख्याल रखते हैं।

गेरुआ पहनकर निकल जाने या कंठी माला डालकर प्रभु नाम जपने से कोई प्रभु का प्रिय नहीं हो जाता। जिसके मन में दया और करूणा नहीं उनसे तो ईश्वर भी प्रसन्न नहीं होते हैं।

धार्मिक प्रवचन केवल पापबोध से कुछ पल के लिए बचा लेते हैं परंतु जीने के लिए संघर्ष अपरिहार्य है और यही वास्तविकता है। मन में यदि करुणा-ममता न हों तो धार्मिक रीतियाँ भी आडंबर बन जाती हैं।

संकलन : चन्द्रशेखर जैन

क्षमा सुख का सागर है

जब सामने वाला आग बने, तुम बन जाना पानी
क्षमा सुख का सागर है, यह है महावीर की वाणी
निकल जाते हैं आंसु, कभी-कभी रोने से पहले
टूट जाते हैं ख्वाब, कभी-कभी सोने से पहले।

क्षमा अनमोल तोहफा है, भूल सुधारने का
काश! कोई पा ले इसे, मृत्यु होने से पहले
'क्षमा वीरों का भूषण है' कथन महावीर का
क्षमा के बिन अहिंसा-पथ अपना नहीं सकते।

कागज की कश्ती में डुबकी लगा नहीं सकते
सूरज पर जाकर, घर अपना बना नहीं सकते
कितना कारगर है, कथन यह प्रभु महावीर का
कि क्षमा के बिन खुशी के फूल खिला नहीं सकते।

क्षमा के बिन आध्यात्मज्योति जला नहीं सकते
क्षमा के बिन प्रेमामृत, हम पिला नहीं सकते
क्षमा के बिन हम कभी, मोक्ष पा नहीं सकते
क्षमा के बिन मानवता को जिला नहीं सकते।

रत्नों के बिना गलाहार बेकार होता है
मानवता के बिना मानव बेकार होता है
सदा संघर्षों के बिना जुझने वाले मानव
क्षमा-दान के बिना तो जीवन भार होता है।

बिना क्षमा के धर्म पताका फहरा नहीं सकते
बिना क्षमा के नेह का नाता, निभा नहीं सकते
क्षमा है वरदान समूचे जैन समाज का
बिन क्षमा के किसी को अपना बना नहीं सकते।

हार्दिक बधाई

रुचि जैन

(सुपुत्री श्रीमती अनिता जैन एवं श्री अनिल कुमार जैन, तेल वाले)
निवासी मानसरोवर, जयपुर

संग

रोनक जैन

(सुपौत्र श्री माणकचंद जी गदिया, अजमेर वाले)
(सुपुत्र स्व. श्रीमती अनिता देवी एवं स्व. श्री पारस कुमार जी गदिया)

का

शुभ विवाह

दिनांक 19.08.2021 को
संपन्न होने के उपलक्ष पर

हार्दिक शुभकामनाऐं

वधु पक्ष :

अनिता-अनिल जैन, मिथलेश-मिथलेश जैन,
चित्रा-राजकुमार जैन, नेहा-मुकेश जैन, इंद्रा-बिमल जैन,
सरोज-गुलाब चंद जैन, राखी-कमलेश जैन,
आरती-दिलीप जैन, किर्ति-राहुल जैन, प्रीति-राहुल जैन,
डॉ. मीनू जैन, दीपक, ऋतुल, सोनिया, स्पृश, दिवयांशी,
मिलन, प्रियांक जैन एवं समस्त धाति परिवार

वर पक्ष :

मानक चंद जी, अशोक कुमार जी,
अरविंद कुमार जी, अनिल कुमार जी, सिद्धार्थ जी
एवं
समस्त गदिया जैन परिवार, अजमेर वाले

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री शान्ती स्वरूप जी जैन
(पुण्य तिथि 13.09.2016)

स्व. श्रीमती सुशीला जी जैन
(पुण्य तिथि 25.06.2006)

स्व. श्री रोहिताश्व जी जैन
(पुण्य तिथि 16.02.2016)

आपका स्नेह, सद्व्यवहार, धर्मपरायणता, सेवा भावना एवं
प्रेरणादायक चरित्र सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा।
हम सभी आपको शत् शत् नमन करते हुये
अश्रुपूरित श्रद्धान्जलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
श्रीमती वीना जैन धर्मपत्नी स्व. श्री रोहिताश्व जैन
अरूण जैन-नीलम जैन
पौत्र-पौत्रवधु :
मुदित जैन-मोनिका जैन
वैभव जैन-रिमझिम जैन
निखिल जैन
नवासे-नवासे वधु :
अंशुमन-शालू, विक्रम-शिल्पी
विशाल-सुमित, विनय-यूथिका

प्रपौत्र, प्रपौत्री :
माही, मानवित, हर्षिका, विहाना

पुत्री-दामाद :
अनिला जैन-अशोक कुमार जैन
ममता जैन-उमेश कुमार जैन
स्व. मालती जैन-राकेश कुमार जैन
पौत्री-पौत्री दामाद :
स्वाति जैन-अमरेन्द्र जैन
नवासी-नवासी दामाद :
नेहा-राहुल
यामिनी-चिराग
ऋतु-भानु

निवास :
दीवान जी का बाग, स्कीम नं. 10-बी के सामने, अलवर

द्वितीय पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्रीमती मालती जैन

(25.6.1964 - 30.09.2019)

हम सभी परिवारजन आपके प्रेरणादायक चरित्र का स्मरण करते हुए
श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

राकेश जैन *(पति)*
अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता (PHED)

देवर-देवरानी :
राजेन्द्र-कल्पना
प्रमोद-रचना

ननद-नन्दोई :
संगीता-जय प्रकाश
नीतू

पुत्र-पुत्रवधु :
विनय जैन-यूथिका जैन

पुत्री-दामाद :
ऋतु जैन-भानू जैन

पौत्र : ग्रहिल

नवासा, नवासी : आर्जव, वेदिका

भाई-भाभी :
बीना धर्मपत्नी स्व. श्री रोहिताश्व जैन
अरूण-नीलम

बहन-बहनोई :
अनिला-अशोक कुमार
ममता-उमेश कुमार

निवास

1-F-15, सत्कार शॉपिंग सेन्टर के पास, मालवीय नगर, जयपुर
मो.: 9829920033, 9783816698

भावभीनी श्रद्धांजलि

33वीं पुण्यतिथि

स्व. श्री माँगी लाल जी जैन
रिटा. पटवारी (करही वाले)
जन्म - 25.02.1910
देवलोक - 25.9.1988

18वीं पुण्यतिथि

स्व. श्रीमती तारादेवी जी जैन
देवलोक 30.7.2003

आपके आदर्श हमारे प्रेरणा स्त्रोत

श्रद्धावनत

पुत्र-पुत्रवधु :
शकुन्तला देवी जैन
प्रीतम चन्द-शीला जैन
हेमचन्द-अनिला जैन
राजेन्द्र प्रसाद-सरोज जैन
वीरेन्द्र कुमार-सुनीता जैन
देवेन्द्र कुमार-मधु जैन

पौत्र :
भागचन्द, राकेश,
पारस, शरद, गिरीश,
अरूण, दिलीप, जितेन्द्र,
गौरव, हनी, जिनेन्द्र, सौरभ

पुत्री-दामाद :
शशिबाला-राजेन्द्र कुमार जैन
रविबाला

निवास

जैन गली, रूपबास (भरतपुर)	मोबा.: 9414973758, 9414333368, 9414654754, 9887930665
183, शान्ति कुंज, अलवर	फोन : 0144-2341541
बयाना (भरतपुर)	मोबा.: 9460912907
ए-19 इन्दिरा कॉलोनी, भरतपुर	मोबा.: 9460738625

अष्टम् पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. श्री त्रिलोक चन्द जी जैन
(08/11/1930 - 02/09/2013)

हम सभी परिवारजन सजल नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

श्रद्धावनत

धर्मपत्नी : बिन्नोदेवी जैन

पुत्री- दामाद :
आशा जैन-देवेन्द्र कुमार जैन
मधु जैन-स्व. बिमल कुमार जैन
सुनीता जैन-राकेश कुमार जैन

पुत्र-पुत्रवधु :
स्व. जिनेन्द्र जैन-स्व. सुनीता जैन
अशोक जैन-वीना जैन

नाती-नातिन :
अभिषेक जैन-वंदना जैन
निशांत जैन-अंजलि जैन
भुवन जैन-सलोनी जैन
शिवानी जैन-मधुप जैन

पौत्र-पौत्र वधु :
निखिल जैन-रीचा जैन

पौत्री-पौत्री दामाद :
पूजा जैन-अमित जैन
इंदू जैन-अतुल जैन

परनाती :
सुयश, अपूर्व, विहान, अर्णव, वंश,
भूमिक, ईशान, एकलव्य, आर्ना, क्यारा

निवास : 7360 ए, शक्ति नगर, प्रेम नगर, दिल्ली-07

मन पर नियंत्रण के उपाय

मन को यदि नियंत्रित कर लिया जावें। उसकी चंचलता को नियंत्रित कर दिया जावें तो मन हमारा सच्चा दोस्त बन जाता है। कई कल्याणकारी कार्य करने की क्षमता हम में आ जाती है। अतीन्द्रिय सामर्थ्य प्राप्त होने लगती है। दुर्भाग्य, सौभाग्य में बदल जाता है। भूत, भविष्य और वर्तमान को भी स्पष्ट देख सकते हैं। पूर्व जन्मों के अच्छे, बुरे सम्बंधों को जान सकते हैं। मन को जीते जीत है, मन से हारे हार। मन में जीत की कल्पना कीजिये, आपकी जीत निश्चित है एवं मन में जीत के प्रति आशंका कीजिये, आपकी हार भी सुनिश्चित है। इन मन का कैसा अद्भुत खेल है? यदि हमें दुःखी रहना है। वासना में लिप्त रहना है। यह मानव शरीर पाक भी निकृष्ट ही बने रहना है, तो मन जैसा कहे करते जावें। किन्तु जीवन को उन्नत बनाना है तो मन पर नियंत्रण करना ही होगा।

मन के भटकाव को रोकने के लिये उसके प्रति विरक्ति आवश्यक है। ध्यान से देखो मन कहां-कहां जा रहा है। जहां-जहां मन जा रहा है वहां-वहां रागात्मक सम्बंध कम करने की कोशिश करो। एक एक सम्बंध कम होता जावेगा और मन का भटकाव भी कम होता जावेगा।

योग द्वारा मन वश में होता है और आत्मदर्शन होने लगता है। योग आत्मा को शरीर से पृथक करने का साधन भी है। मानसिक विकृति को दूर करने के लिये योग एक सशक्त माध्यम है। मन की अस्त-व्यस्तता ही मानसिक विकृतियों का कारण होती है। योग द्वारा मन एकाग्र होता है। इसकी चंचलता समाप्त होने लगती है। व्यक्ति अपने आप को शांत, हल्का-फुल्का महसूस करने लगता है।

अपनी आँखों को बंद करें। गहन शिथलता की अनुभूति करें। मन में यह विचार करे कि मेरी मात्र आत्मा है और मेरा कुछ नहीं, यहां तक की यह शरीर भी पराया है। यदि कोई मेरा है जिसे मैं अपना मान सकूं तो वह है मात्र आत्मा। न मेरा किसी से द्वेष है और न ही किसी से राग है। मेरे लिये सब समान है। परिवार, धन-दौलत सब पराये हैं, जिनका मुझे एक दिन त्याग करना है। ये मेरे साथ नहीं जायेंगे, मेरे साथ तो मात्र मेरी आत्मा तथा मेरे कर्म ही रहेंगे जब ध्यान होता है, तो मन अपने आप सध जाता है। मानसिक विकृति को दूर करने के लिये 'ध्यान' एक अशक्त माध्यम है। ध्यान द्वारा मन ही चंचलता समाप्त होती है। एकग्रता बनती है तथा ऐसी स्थिति में मिलने वाला आत्मीय सुख तथा शांति मन की सारी जटिलताओं को आसान बना देती है तथा आत्मा को शरीर से अलग करने का साधन भी ध्यान योग ही है। अति परिचय तथा अति परिग्रह भी ध्यान के शत्रु हैं। परिचय भी आवश्यकता के अनुरूप कम से कम बढ़ाने चाहिये। क्योंकि परिचय का जितना विस्तार होगा, मन भी उतनी जगह भटकेगा। मन को मारने के बजाय मन को समझो, ध्यन न तो मन को मारता है, न दबाता है और न ही बांधता है। ध्यान तो मन की एकाग्रता है। मन को जीना है तो संकल्प शक्ति मजबूत हो, बिल पॉवर मजबूत हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। मन में संयम की सुवास होगी तो मंजिल भी पास होगी दृढ़ संकल्पशक्ति से सब कुछ पाया जा सकता है। जैसा हम चाहेगे मन वही करेगा। मन को जीतना है तो संकल्पशक्ति को मजबूत करें।

बुद्धि का अंहकार

व्यक्ति अहंकार से मुक्त नहीं हो पाता। चाहे तो भी उसकी बुद्धि बीच में आ जाती है। बुद्धिमान होना भी एक नशा है। उसमें भी कभी उम्र का मावा जुड़ जाता है, कभी धन का, कभी पद का। एक नशे से मुक्त होने पर दूसरा नशा घेरा डाल देता है। बुद्धि का कार्य घेरे पर घेर बढ़ाना ही है। घेरे काटना, साधारण बुद्धि का कार्य नहीं है।

बुद्धि का अर्थ है सूचनाओं का पुलिंदा। जैसा की हमारा कम्प्यूटर होता है। चारों से हम इसमें कुछ न कुछ भरते रहते हैं। जो हमारे भीतर भर जाता है, वह हमारा हो जाता है। उसे हम आसानी से नहीं छोड़ सकते। ये जानकारियां हमारी बुद्धि को पकड़ लेती हैं। जाल बन जाता है।

जीवन में कोई उपदेश काम नहीं आएगें बुद्धिमान व्यक्ति तो अन्य किसी की बात को आसानी से मान ले यह संभव नहीं है। ''बुद्धि का अहंकार'' बढ़ते बढ़ते मन को भी ढ़ंक लेता है।

'ज्ञान' तो बाहर से आता है कहीं हमको चलाता रहता है। वहीं अन्य लोगों को चलाता रहता है। इसका मतलब यह है कि हम एक दूसरे से बाहरी तौर पर मिलते हैं हम स्वयं को भीतर से नहीं जानते और सामने वाला भी स्वयं से अनभिज्ञ होता है।

-संतोष जैन
मानसरोवर, जयपुर

प्रथम पुण्यतिथि (10 अक्टूबर 2021) पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि

स्व. श्री स्वरूप चन्द जी जैन

(मंडावर वाले)

(स्वर्गवास : 10.10.2020)

हम सभी परिवारजन आपके उच्च विचारों व आदर्शों को अपने जीवन में उतारने को सदैव प्रयासरत हैं तथा आपको सदैव श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

धर्मपत्नी : हेमलता जैन

पुत्र-पुत्रवधु :
सुनील कुमार-नीलम जैन
अनिल कुमार-नीलम जैन

भतीजा-भतीजा वधु :
जितेन्द्र-सरिता जैन
कृष्ण-राधिका जैन
कुलदीप-प्राची जैन

भ्राता : सुरेश चन्द्र जैन

पौत्र : अमन, चिराग, दक्ष, प्रखर, नैतिक, अर्थव

पौत्री : पलक

पुत्री-दामाद :
मधु-अनिल जैन
मंजू-छगन लाल जैन

दोहिते :
अंकित, बसन्त,
विपुल, जयेश

दोहिती :
रिद्धी जैन

एवं समस्त कोटिया परिवार (मण्डावर वाले)

निवास : 481, रजनी विहार, अजमेर रोड, जयपुर
मो.: 9314476414, 9784012386

हमारे प्रेरणा स्त्रोत एवं मार्गदर्शक परम पूज्यनीय

स्व. श्री बाबूलाल जी जैन एवं स्व. श्री विजय कुमार जी जैन (अर्रूआ वाले)

की पुण्य स्मृति पर हम सभी परिजन अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

स्व. श्री बाबूलाल जी जैन

(स्वर्गवास : 14.09.1996)

स्व. श्री विजय कुमार जी जैन

(स्वर्गवास : 14.09.2020)

-: श्रद्धांजलि :-

श्रीमती कान्ता जैन (पत्नी)

स्व. श्री विजय कुमार जी जैन (अर्रूआ वाले)

पुत्र-पुत्रवधु

भाई :-

सतीश चन्द जैन-सुनीता जैन

विनोद कुमार जैन-निर्मला जैन

महेन्द्र कुमार जैन-त्रिर्सला जैन

पुत्री-दामाद :

पूनम जैन-कौशल जैन

मिनी जैन

बहन-जीजाजी :

कमलेश जैन-जगदीश प्रसाद जैन

रेखा जैन-अनिल कुमार जैन

हेमलता जैन-सुनील कुमार जैन

इन्द्रा जैन-मोहन कुमार जैन

एवं समस्त दिवरिया परिवार

पुत्र-पुत्रवधु

अंकुर जैन-नेहा जैन

आशीष जैन-मोनिका जैन

अंकित जैन-सुरभि जैन

अविनाश जैन, हेमन्त जैन

अर्पित जैन, अनुज जैन

राज जैन

पौत्री :

अंशिका जैन

निवास स्थान :

1. म.नं. 590, मौ. ललुआ, अछनेरा, आगरा
2. फ्लेट नं. 203, पार्क वेली, बी.एम.जी. कम्पाउण्ड, बेनारा फेक्ट्री, बोदला, आगरा

-: प्रतिष्ठान :-

जैन स्टील फर्नीचर एंड इलेक्ट्रोनिक्स, अछनेरा, मो.: 9412590310

जैन मेडिकल एजेन्सी, फुब्बारा आगरा, मो.: 9897418246

K.S. NUTRITION HUB, Mob.: 8859725906

वैवाहिकी

सूचना

1. पत्रिका में प्रकाशित वर/वधू की तलाश के अंतर्गत विवरण की सत्यता से सम्पादक अथवा पत्रिका का किसी भी प्रकार का दायित्व नहीं हैं। वर/वधू दोनों पक्ष पूर्ण जानकारी अपने स्तर से करने के बाद ही संबंध स्थापित करें।
2. पात्रों के विवरण में आयु के स्थान पर जन्मतिथि तथा आय चार/पांच अंको में, के स्थान पर वास्तविक आय लिखें।

नोट : प्रकाशन योग्य सामग्री एवं संबंध होने की सूचना पत्रिका संयोजक को प्रषित करें जिससे आगामी अंक में विज्ञापन का प्रकाशन किया जाये या न किया जाये।

वर की तलाश

★ **अंकिता जैन** पुत्री श्री सुरेश चन्द जैन (पहाड़ी वाले भरतपुर), जन्मतिथि 27.10.1999 (प्रातः 11:41 बजे), कद– 5'–4'', शिक्षा– एम.ए. राजनैतिक शास्त्र, गौत्र : स्वयं– बडवासिया, मामा– चौधरी, सम्पर्क : 11, श्रीनाथ नगर, श्योपुर, सांगानेर, जयपुर, मो.: 9829226665, 9166330088, 8058345473 *(अगस्त)*

★ **निकिता जैन** पुत्री श्री राजेश कुमार जैन, जन्मतिथि 20.08.1999 (प्रातः 09:15 बजे, जयपुर), कद– 5'–5'', शिक्षा– एम.ए. इतिहास, गौत्र : स्वयं– अठवरसिया, मामा– चौधरी, सम्पर्क : बी–108, अशोक विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर–302018, मो.: 9672357285, 9414055855 *(सितम्बर)*

★ **शुचि जैन** पुत्री श्री मुकेश चन्द जैन, जन्मतिथि 17.08.1996, शिक्षा– एम.एस.सी., बी.एड., गौत्र : स्वयं– पावटिया, मामा– मस्तंगडंग्या चौधरी, सम्पर्क : शिव स्कूल वाली गली, जैन कॉलोनी, खेरली, अलवर, मो.: 9414321710 *(सितम्बर)*

★ **Bharti Jain** D/o Sh. Gulab Chand Jain, DoB 04.06.1996, Height- 5'-3", Education- B.Tech. (EC) NIT Raipur, Occupation- PSU Under Central Govt., Present Posting- Assistant Manager at NTPC (Farakka, West Bengal),Package- 18LPA, Gotra : Self- Belanvasiya, Mama- Behtariya, Contact : C-137, Malviya Nagar, Alwar, Mob.: 8426077674, 7742980739 *(July)*

★ **Nitasha Jain** D/o Sh. Rajesh Kumar Jain, DoB 05.07.1993 (at 1:45 am, Shivpuri), Height 5'-4", Fair Complexion, Education- B.Com., MBA (Indore), Gotra : Self- Rajoriya, Mob.: 9425765937, 9993978225, 9926689177 *(July)*

★ **Shipra Jain** D/o Sh. Narendra Kumar Jain, DoB 23.03.1992 (at 12:30, Alwar), Height- 5'-4", Education- B.Com, JBT, M.Sc., MCA, Occupation- Working in Bank, Gotra : Self- Balanwasia, Mama- Badaria, Contact : 215/3, Gopal Nagar, Gurgaon (Haryana), Mob.: 8802118298, 9015993930, Email : nkjain1012@yahoo.com *(July)*

★ **Diksha Jain** D/o Late Sh. Yogesh Jain, DoB 28.09.1994 (at 10:45 am, Jaipur), Height- 5'-3", Fair Complexion, Sober, Education : B.Com., MBA (HR and Marketing) R.A. Podar Institute of Management, Jaipur, Employment- Akeo Software Solutions Pvt. Ltd Jaipur - A global innovative technology driven company with offices at India & Norway. (HR Generalist) Annual CTC: 4.2 Lakh, Gotra : Self- Danduria, Mama- Barwasiya, Contact : Anita Jain, 86, Magan Villa, Shreevihar Colony, JLN Marg, Jaipur-302018, Mob.: 9829134926, 8560826019, 9828058599, Email: csjain30@yahoo.co.in *(July)*

★ **Prachi Jain** D/o Late Sh. Sanjay Kumar Jain (Nowgaon, Alwar), DoB 11.11.1995 (at 7:05 am, Alwar), Height 5'-3.5", Education- B.Tech in ECE, Working in Bangalore based MNC, Package : 14 LPA, Gotra : Self- Nageshwaria, Mama- Janothariya, Contact : Ekta Jain, Jaipur, Mob.: 9462229831, Email : ektajain1972@gmail.com *(Aug.)*

★ **Vidhi Jain** (Anshik Manglik) D/O Sh. Anil Kumar Jain, DoB 02.11.1993 (7:40 am, Jaipur), Height 5'-1", Education- B.E. (EC) Indore, Working at Pune, Package- 11 LPA, Gotra : Self- Chandpuria, Mama- Nangeswariya, Contact : Anil Kumar Jain, Mob.: 9926063720 *(Aug.)*

★ **Neha Jain** D/o Sh. Mohitash Jain, DoB 03.01.2000 (at 12:25 pm, Agra), Height- 5'-3", Fair Complexion, Education M.Sc. (Previous), CCC (Computer Course), Gotra : Self- Kher, Mama- Janutharia, Contact : Sector 7, 537, Avas Vikas Colony, Bodla, Agra, Mob.: 9837314626, 9358980224, 9368728827 *(Aug.)*

★ **Ritu Jain** D/o Sh. Santosh Jain, DoB 29.04.1991 (at 12:30 AM), Height 5'-2:, Fair Colour, Education M.A. (Hindi), Practicing of Stenography, preparing for Govt. Job, Gotra : Self- Baderiya, Mama- Badwasiya, Contact : E-269, Mansarovar

Colony, Kala Kuan, Alwar (Raj.), Mob.: 8104423381, 8209718443 *(Aug.)*

★ **Amisha Jain** (Anshik Manglik) D/o Sh. Kamal Kumar Jain, DoB 10.07.1997 (at 1:56 pm), Height- 5'-3", Education- B.Com, MBA, Job- HDFC Mutual Fund, Gotra : Self- Thakuriya, Mama- Chodha Parivaar, Contact : 103, Chhotti Chhapeti, Firozabad- 283203, Mob.: 7351568144, 7830641569 *(Sep.)*

★ **Megha Jain** D/o Sh. Pradeep Kumar Jain, DoB 20.04.1997 (at 8:15 pm, Agra), Height- 5'-2", Education- BBA, MBA (HR and Finance), Occupation- HR Executive, Gotra : Self- Baderiya, Mama- Nehoniya, Contact : Sh. Pradeep Kumar Jain, Mob.: 9412262871 *(Sep.)*

★ **Sonakshi Jain** D/o Sh. Yogesh Kumar Jain, DoB 27.03.1993 (at 07:04 AM, Agra), Height 5'-4", Education- B.Tech. in Electrical and Electronics from Shiv Nadar University and MBA in Finance from USMS, Currently Working with Tata Power, Delhi Distribution Limited as Manager, Package- 10.5 LPA, Gotra : Self- Baderia, Mama- Chaudhhary, Contact : 7060928794, 9634081372 *(Sep.)*

★ **Pragati Jain** D/o Sh. Prakash Chand Jain, DoB 25.03.1998, Education- B.Tech. (Computer Science), Working in a Reputed Company, Package 6 LPA, Gotra : Self- Bhavariya, Mama- Chaudhary, Contact : Sh. Prakash Chand Jain, Abhay Vidya Mandir, Kherli, Mob.: 9414 638456, 890 5469824 *(Sep.)*

★ **Shaina Jain** (Manglik, Divorcee) D/o Sh. Shital Prasad Jain, DoB 11.03.1992 (at 6:22 a.m., Alwar), Height 5'-4", Education- BBA, MBA, PGDCA, Working at HDFC Bank New Delhi, Gotra : Sangarwasia, Contact : Sh. Shital Prasad Jain, Raj Nagar Part-2, Palam Colony, New Delhi, Mob.: 9354830171, 9560649574, 9899076686 *(Sep.)*

★ **Yashika Jain** D/o Sh. Yogesh Kr. Jain, DoB 01.07.1996 (at 07:13 pm, Alwar), Height 5'-3", Fair Color, Education- B.Com, M.Com, MBA Pursuing, Occupation- Presently Working with Indusind Bank, Jaipur, Gotra : Self- Rajeshwari, Mama- Choudhary, Contact : Near Jain Mandir, Main Market, Ramgarh, Alwar-301026, Mob.: 9602478710 *(Sep.)*

★ **Monika Jain** D/o Sh. Teekam Chand Jain, DoB 13.08.1997 (at 06:45 AM, Gahnoli, Mahwa, Dist. Dausa), Height 5'-2.5", Fair Complexion, Education- M.A. (Geography), Pursuing B.Ed., M.Ed. Final year, Gotra : Self- Baroliya, Mama- Bahattariya, Contact : VPO Gahnoli, Teh. Mahwa, Dist. Dausa (Raj.), Mob.: 9783522066, 9549836811, Email : jain.vipul052@gmail.com *(Sep.)*

★ **Deeksha Jain** (Anshik Manglik) D/o Sh. Rakesh Kumar Jain, DoB 07.08.1993 (at 10:15 am, Agra), Height- 5'-4", Education- B.Com., M.B.A., Job- Analyst in E.Y. Noida, Income- 6 LPa, Gotra : Self- Badaria, Mama- Chorbambar, Contact : 325, Jaipur House, Agra-02, Mob.: 9997039641, Ph.: 0562-4031148 *(Sep.)*

★ **Dr. Namita Jain** D/o Sh. Pradeep Kumar Jain, DoB 28.10.1992 (at 6:45 am, Gangapur City), Fair Color, Height 5'-1'', Education- M.Sc. Biotechnology from Mohanlal Sukhadia University, Udaipur and Pursuing NDDY (Diploma in Naturopathy and Yoga) Course. Currently Working as a Lab Assistant in a FMCG Company at Jaipur as well as also preparing for Govt. Exams., Gotra : Self- Rajoriya, Mama- Chaudhary, Contact : 9875164685, 8104074480, 9667428428, Email : kiran.telecom80@gmail.com *(Sep.)*

★ **Megha Jain** D/o Sh. Sunil Kumar Jain, DoB 02.04.1996 (at 2:20 pm), Fair Color, Height 5'-3", Education- B.Tech. in Computer Science, Contact : Sh. Sunil Kumar Jain, Saras Dugdh Dairy Colony, Raniwara, Dist. Jalore, Mob.: 9460960622, 9001831835 *(Sep.)*

वधू की तलाश

कृपया दहेज लोभी पत्रिका में प्रकाशनार्थ विज्ञापन न भेजें

★ **चिराग जैन** पुत्र श्री भारत भूषण जैन, जन्मतिथि 08.06.1988 (रात्रि 11:30 बजे, भरतपुर), कद– 5'–11'', शिक्षा– एम.सी.ए, जौब– नैक ग्लोबल प्रा.लि. सीतापुरा, जयपुर में नेटवर्क ऐडमिनिस्ट्रेटर के पद पर कार्यरत, आय– 5.20 लाख वार्षिक, गोत्र : स्वयं– मुड़ा, मामा– चौरबमबार, सम्पर्क : 121–122, पशुपतिनाथ नगर, प्रताप नगर, जयपुर, मो.: 8005540739, 9828234847 *(जुलाई)*

★ **आशीष जैन** पुत्र श्री अनिल कुमार जैन, उम्र 28 वर्ष, कद– 5'–8'', शिक्षा– स्नातकोत्तर, व्यवसाय– स्वयं की दुकान, आय– 45 हजार मासिक, गोत्र : स्वयं– सलावदिया, मामा– पदमावती पोरवाल, सम्पर्क : 10, सर्वोत्तम कॉम्पलेक्स, वैशाली अपार्टमेन्ट के पीछे, मनवाखेड़ा रोड, हिरणमगरी, सेक्टर 4, उदयपुर, मो.: 9462191766,

9414720072 *(जुलाई)*

★ **अरूण जैन** पुत्र श्री सुरेश चन्द जैन (पहाड़ी वाले भरतपुर), जन्मतिथि 14.02.1996 (प्रातः 9:41 बजे), कद– 5'–6'', शिक्षा– सीनियर सैकेण्डरी व डिप्लोमा इन मेडिकल लेब्रोट्रिज, कार्यरत– स्वयं लेब्रोट्रीज कार्य 'पार्श्व डाइग्नोस्टिक सेन्टर', गौत्र : स्वयं– बडवासिया, मामा– चौधरी, सम्पर्क : 11, श्रीनाथ नगर, श्योपुर, सांगानेर, जयपुर, मो.: 9829226665, 9166330088, 8058345473 *(अगस्त)*

★ **गौरव जैन** पुत्र श्री सुभाष चन्द्र जैन, जन्मतिथि 20.03.1993 (रात्रि 12:17 मिनिट), कद– 5'–5'', शिक्षा– एम.ए. (संस्कृत), व्यवसाय– स्वयं का (जैन ट्रेडर्स होल सेल विक्रेता) शिवपुरी, आय– 1 लाख प्रति माह, सम्पर्क : सुभाष चन्द्र जैन, शिवपुरी, मो.: 9630528344 *(अगस्त)*

★ **सौरव जैन** पुत्र श्री सुभाष चन्द्र जैन, जन्मतिथि 14.04.1997 (सायं 6 बजे), कद– 5'–5'', शिक्षा– बी.कॉम., व्यवसाय– स्वयं का (जैन डिपार्टमेन्टल स्टोर, शान्ती नगर, शिवपुरी), सम्पर्क : सुभाष चन्द्र जैन, शिवपुरी, मो.: 9630528344 *(अगस्त)*

★ **विवेक जैन** (विधुर) पुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, जन्मतिथि 28.08.1985, कद– 5'–8'', रंग गोरा, शिक्षा– बी.कॉम., व्यवसाय– स्वयं का (विवेक फ्लोर मिल, आगरा), गोत्र : स्वयं– जनूथरिया, मामा– धाती, सम्पर्क : 46/4ए/3ए, आवास विकरस कॉलोनी, बोदला, आगरा, मो.: *9897361262 (अगस्त)*

★ **रिषभ जैन** पुत्र श्री प्रदीप कुमार जैन, जन्मतिथि 13.05.1995 (प्रातः 6 बजे), कद– 5'–6'', शिक्षा– पी.जी.डी.एम.बी.ए. फाइनेन्स, कार्यरत– रिजनल क्रेडिट हेड– आई.डी.एफ.सी. बैंक जयपुर, गोत्र : स्वयं– जनुथरिया, मामा– चौरबम्बार, सम्पर्क : *9, भजन नगर, अजमेर रोड, ब्यावर, अजमेर, मो.: 9460312001, 9414866607 (अगस्त)*

★ **निलेश जैन** पुत्र श्री राजेश कुमार जैन, जन्मतिथि 06.10.1997 (दोपहर 02:04 बजे, जयपुर), कद– 5'–7'', शिक्षा– बी.टेक. (सी.एस.), जयपुर, कार्य– आई.टी. कम्पनी, गौत्र : स्वयं– अठवरसिया, मामा– चौधरी, सम्पर्क : बी–108, अशोक विहार विस्तार, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर–302018, मो.: 9672357285, 9414055855 *(सितम्बर)*

★ **सौरभ जैन** पुत्र श्री मुकेश चन्द जैन, जन्मतिथि 07.11.1993, कद– 5'–11'', शिक्षा– बी.टेक. (मैकेनिकल), व्यवसाय– वर्किंग स्ट्राईकर एज सप्लायर क्वालिटी एस्योरेंस स्पेसलिस्ट, गुड़गांव, वार्षिक आय– 10.5 लाख, गौत्र : स्वयं– पावटिया, मामा– मस्तंगडंग्या चौधरी, सम्पर्क : शिव स्कूल वाली गली, जैन कॉलोनी, खेरली, अलवर, मो.: 9414321710 *(सितम्बर)*

★ **समकित जैन** पुत्र श्री दीपक जैन, जन्मतिथि 30.08.1996 (सायं 5:55 बजे, राजगढ़, ब्यावरा), कद– 5'–8'', शिक्षा– बी.ई.– सिविल इंजिनियरिंग एक्रोपोलिस, इन्दौर, डी. फार्मा, व्यवसाय– स्वयं का बिजनेस, आय– 6 अंकों में, गौत्र : स्वयं– पल्लीवाल, मामा– राजोरिया, सम्पर्क : जय स्तंभ के सामने, राजगढ़, ब्यावरा, म.प्र., मो.: 9300960051, 9425334417 *(सितम्बर)*

★ **Devanshu Jain** S/o Sh. Pankaj Jain, DoB 18.10.1994, Height 6'-2", Education- MS (Computer) from USA, Occupation- Software Engineer at YouTube, Google California, USA, Package- US $ 2.5 LPA approximately, Strictly Vegetarian and Non Alchoholic boy with good family values, Gotra : Self- Angras, Jaiswal, Mama-Mangoliya, Khandelwal; Contact : Dwarka, New Delhi, Mob.: 9313586222, 9717052226, Email : ydjain2318@gmail.com *(July)*

★ **Shivin Jain** S/o Dr. Raj Kumar Jain, DoB 16.11.1991 (at 9:51 pm, Moradabad, U.P.), Height- 5'-6", Education- B.Tech with Honours (Civil Engg.) from Y.I.T. Jaipur, Working in Parental Real Estate Business, Pearl Group, Jaipur, Gotra : Self- Sangeswaria, Mama- Kotia, Contact : Dr. Raj Kumar Jain, B-78/602, Pearl Passion, Rajendra Marg, Bapu Nagar, Jaipur, Mob.: 9414054745, 9929769939. Email : rkjainpearl@gmail.com *(July)*

★ **Anubhav Jain** S/o Sh. Arvind Kumar Jain, DoB 08.09.1992 (at 10:45 PM, Alwar), Height- 5'-7", Education- B.Tech., M.Tech, ICT Jaipur, Occupation- Senior Analytics, Boston Consulting Group Gurugram, Package- 18.5 LPA, Gotra : Self- Janthuriya, Mama-Sagarwasiya, Contact : Sh. Arvind Kumar Jain, D-72 H.M.M Nagar, Alwar, Mob.: 9414367288 *(July)*

★ **Rohit Kumar Jain** S/o Sh. Gyanchand Jain, DoB 28.11.1994 (at 7:00 AM, Bharatpur), Height- 5'-7", Fair Complexion, Education- B.Tech from NIT Kurukshetra, Working as Consultant in HCL Technologies, Noida, Income 13 LPA, Gotra : Self- Khair, Mama- Salawadia, Contact : 9460737358, 7976360536, 9079250256, Email : rohitsonu33@gmail.com *(July)*

★ **Abhinav Jain** S/o Sh. Vijay Kumar Jain, DoB

22.12.1994 (at 7:53 am, Agra), Height- 5'-6", Education- B.Sc., Job- Assistant Manager in Aryavart Bank, Gotra : Self- Salavadia, Mama- Kotia, Contact : Balaji Puram, Shahganj, Agra, Mob.: 9319213080 *(July)*

★ **CA Gaurav Jain** S/o Sh. Padam Chand Jain, DoB 25.05.1995 (at 9:22 PM Kherli, Alwar), Height- 5'-11", Education- Chartered Accountant, Occupation- Mgmt. Trainee, Genpact, Gurugram, Income- 8 LPA, Gotra : Self- Salavadiya, Mama- Chaudhary, Contact : 92-F1, Arjun Nagar North, Jaipur, Mob.: 9414856933, 9468598216 *(July)*

★ **Abhishek Jain** S/o Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 22.07.1992 (at Agra), Height 5'-5", Education- M.Com, Occupation- Working as Sr. Accountant with Taj Vilas in Agra and drawing 3+ LPA, Gotra : Self- Januthariya, Mama- Baebare, Contact : 37/472, Nagla Padi, Dayal Bagh, Agra, Mob.: 9219219655, 7906973116 *(July)*

★ **Nilesh Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 30.06.1985 (at1:22 pm, Ajmer), Height 5'-8", Education- M.Com., MBA, Occupation- Working as a State Head at Manba Finance Ltd. Co., Jaipur, Income- 10.50 LPA, Gotra : Self- Maimunda, Mama- Chorbambar, Contact : 11/40, Kaveri Path, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9983444198 (W), 9829818894 *(July)*

★ **Anant Kumar Jain** S/o Sh. Ashok Kumar Jain, DoB 19.07.1998, Height- 5'-5", Education- B.A pursuing, Occupation- Business (Grain Merchant), Contact : Nahar Road, Opp. Vikash Marriage Home, Gangapur City (Sawai Madhopur), Mob.: 9414551964, 8078695264 *(July)*

★ **Ajit Jain**, S/o Late Sh. Vinod Kumar Jain, DoB 27.06.1990 (at 3:55 PM, Bharatpur), Height- 5'-10", Education- B.Tech (VIT, Vellore), Presently Working as Assistant Manager in Canara Bank, Bayana, Gotra : Self- Chourbambar, Mama- Borandangya, Contact : Smt. Pushpa Jain, Bharatpur (M) 9785122157, Ashwani Jain, Bharatpur (M) 6350427579 *(July)*

★ **Kapil Kumar Jain** S/o Sh. Davendra Kumar Jain, DoB 15.06.1988 (at 7:09 am, Alwar), Height- 5'-7", Education- Diploma (Mech. Engg.), Service- Engineer in a Company Alwar, Package- 3 LPA, Gotra : Self- Balanvasia, Mama- Ladodia, Contact : Sh. Davendra Kumar Jain, Harsana, Alwar, Mob.: 8802118298, Email : rohit_jain1012@rediffmail.com, nkjain1012@yahoo.com *(July)*

★ **Shubham Jain** (Manglik) S/o Sh. Subhash Jain, DoB 25.06.1995 (at 4:20 am, Jaipur), Height- 5'-5", Education- B.Com., PGDM from RIIMS, Pune, Occupation- Working in FMCG Company at Jaipur, Gotra : Self- Salawadia, Mama- Badwasiya, Contact : Sh. Subhash Jain, Vaishali Nagar, Jaipur, Mob.: 9414073201 *(July)*

★ **Amit Kumar Jain** S/o Sh. Girish Chand Jain, DoB 08.03.1988 (at 2:05 pm, Agra), Height 5'-4", Fair Complexion, Education- B.Com., Occupation- Business, Income : 3 LPA, Gotra : Self- Danduriya, Mama- Barwasia, Contact : 1320, LIG, Sector-7, Avas Vikas Colony, Bodla, Agra, Mob.: 8410820442, 9897232561 *(July)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Sheel Chand Jain, DoB 19.08.1990 (at 5:00 pm), Height- 5'-9", Educatio M.Com from IGNOU, Occupation- Working in Magic Auto Pvt Ltd. (Maruti Authorised Dealership) as a Team Manager, Package- 5.25 LPA, Gotra : Self- Mundare, Mama- Ved Varashtak, Contact : RZG-98B, 1st Floor, Gali No. 6, Near Shyam Mandir Rajnagar Part-II, Palam Colony, New Delhi-110077, Mob.: 9718967990, 9911218537, Email : rrjain619@gmail.com *(July)*

★ **Mehul Jain** S/o Sh. Ashok Jain, DoB 31.07.1995 (at Jaipur), Height- 5'-7", Education- B.Tech (Computer Science) SRM University Chennai, Occupation : System Engineer at Mekari, Bengaluru, Salary : 16LPA, Gotra : Self- Maimuda, Mama- Rajoria, Contact : 658, Mahaveer Nagar, Landmark Pooja Tower, Gopalpura Bypass, Jaipur, Mob.: 9928070403 *(July)*

★ **Dikshant Jain** S/o Sh. Alok Jain, DoB 01.07.1994 (at 06:10 pm, Jaipur), Height- 6'-1", Wheatish Complexion, Education- B.Com., LL.B, DTL, Profession- Advocate, Gotra : Self- Vairashtak, Mama- Barwasiya, Contact : 14, Ganga Path, Suraj Nagar (W), Civil Lines, Jaipur, Mob.: 9828115123, 9828012523, Email : alokad67@rediffmail.com *(July)*

★ **Prayansh Jain** S/o Sh. Prakash Chand Jain, DoB 27.02.1994 (at 8:10 PM, Alwar), Height 5'-8", Education- B.Tech. (JECRC Jaipur), Occupation- Software Engineer in Metacube Software Pvt. Ltd. Jaipur, Package- 7.5 LPA, Gotra : Self- Nageshwaria, Mama- Badwasia, Contact : Jain Tyres, 9, Bapu Bazar, Alwar, Mob.: 9829215414 *(Aug.)*

★ **Yogendra Jain** (Manglik) S/o Sh. Lokendra Jain, DoB 24.12.1992 (at 4:13 AM, Gailana Agra), Height 5'-10'', Education B.E. (E.C.), Job- Software Developer at Extra Marks Education India Pvt. Ltd., Salary- 7 LPA, Gotra : Self- Kashmiria, Mama- Lahdodiya, Contact : Ekta Nagar, Sagartal Road, Bahodapur, Gwalior,

Mob.: 9584222795, 9179800986 *(Aug.)*

★ **Aditya Jain** S/o Late Sh. Sheetal Kumar Jain, DoB 25.12.1990 (at 1:00 AM, Agra), Height 5'-8", Education- B.Tech & PG Diploma in Banking, Occupation- Assistant Manager in Axis Bank, Income- 4.48 LPA, Gotra : Self- Bugala, Mama- Salavadia, Contact : House No. 150, Bhudara Bazar, Karauli, Rajasthan, Mob.: 9460913709, 9461455353, 9413886798, Email : adijain19@gmail.com *(Aug.)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. T.C. Jain, DoB 04.01.1994, Gotra : Self- Athvarsiya, Mama- Baderya, Education- MCA, Job- Software Engineer at Neosoft Pune, Contact : 252, Patel Nagar, Muhuna Mandi Road, Jaipur, Mob.: 9001533497, 7014658129 *(Aug.)*

★ **Arpit Jain** S/o Sh. Narendra Kumar Jain, DoB 12.09.1992 (at 8:31 am, Jaipur), Height- 5'-7", Education- M.Tech. (NIT, Bhopal) & Pursuing P.H.D. IIT Hyderabad, Occuption- IC Layout Designor in Synopsys Hyderabad, Package- 28 LPA, Gotra : Self- Ladoriya, Mama- Bayaniya, Contact : Ward No. 7, Jain Colony, Kajodi Ka Mohalla, Kherli (Alwar), Mob.: 9413907815, Email : arpitkherli@gmail.com *(Aug.)*

★ **Anshul Jain** S/o Sh. Pushpendra Jain, DoB 14.03.1994 (at 9:12 AM, Agra), Height 5'-11", Education- B.Com., Occupation- Own Business, Gotra : Self- Salawadia, Mama- Maimuda, Contact : Jain Readymade and Book Store, Midhakur (Agra), Mob.: 9410006648, 8445463430 *(Aug.)*

★ **Pawan Jain** (Manglik) S/o Sh. Murari Lal Jain, DoB 16.12.1987, Height 5'-6", Education- B.A., Job- Contractor of Edu. Department in All Category, Gotra : Self- Mast Dangiya Choudhary, Mama- Rajoriya, Contact : Deewan House, Bada Bazar, Kaurali (Raj.), Permanent Address : 4/443 Kala Kuan Housing Board, Aravali Vihar, Alwar (Raj.), Mob.: 9982075473, 9887007334, Email : pawan4.jain@gmail.com *(Aug.)*

★ **Sudhir Jain** S/o Sh. Sumer Chand Jain, DoB 17.03.1988 (at Alwar), Height 5'-11", Education- M.Com., MBA, LLB, Occupation- Working in NBC Bearings, Jaipur (C.K. Birla Group), Gotra : Self- Sangarwasiya, Mama- Chaudhary, Contact : 213, Vivek Vihar, Scheme No. 10A, Distt. Alwar-301001, Mob.: 9982154002 *(Aug.)*

★ **Atul Jain** S/o Sh. Sanjeev Kumar Jain, DoB 24.07.1995 (at 1:00AM, Kherli, Alwar), Height 5'-7", Education- B.Sc., MBA, Occupation- Working in Sun Pharma as M.R., Salary- 6.85 LPA, Gotra : Self- Bayaniya, Mama- Chorbambar, Contact : 87, Pratap Nagar, Kalware Road, Jhotwara, Jaipur-302012, Mob.: 9414446323, 9694635099 *(Aug.)*

★ **Chandra Prakash Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 09.03.1987 (at 11:50PM, Gwalior), Education- B.Com., ITI, Occupation- Business (Electrical Shop), Gotra : Self- Kotia, Mama- Maimuda, Contact : A-9, New Vivek Nagar, Behind Mela Ground, Thatipur, Gwalior, Mob.: 930999134, 9268731636, 7000626305 *(Aug.)*

★ **Aman Kumar Jain** S/o Late Sh. Akshay Kumar Jain, DoB 20.07.1993 (at 6:15PM, Ramgarh, Alwar), Height 5'-6", Education- BCA, LLB, Hardware & Networking Engineering Course from Jetking, Alwar, Occupation- Working as an Advocate in Ramgarh, District Court, Alwar, Income 3.50 LPA, Gotra : Self- Ved-Vairasthak, Mama- Chandpuriya, Contact : Kushal Chand jain, Chopra Bazar, Ramgarh, Alwar, Mob.: 9828063780, 9660546052, 8233470032, Email : aman92jain@gmail.com *(Aug.)*

★ **Abhishek Jain** S/o Late Sh. Devendra Kumar Jain, DoB 21.09.1993 (at 12:55 PM, Alwar), Height 5'-10", Education- B.Tech. (EC), Occupation- Working in Havells, Alwar, Gotra : Self- Maleshwari, Mama- Chorambaar, Contact : 205, Scheme No. 1, Arya Nagar, Alwar, Mob.: 8000669150, Email : abhijain2109@gmail.com *(Aug.)*

★ **Pallav Jain** S/o Sh. Pavan Kumar Jain, DoB 24.07.1993 (at Jaipur), Height 5'-6", Education- Post Graduate-COAC (Pune), B.Tech (CS), Occupation- Compliance Research Analyst, Pune, Package- 12 LPA, Gotra : Self- Salavadiya, Mama- Athvarsiya, Contact : 165/A, Patel Nagar, Iskon Road, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9414870136, 9414870134 *(Aug.)*

★ **Arihant Kumar Jain** (Divorcee) S/o Sh. Trilok Chand Jain, DoB 10.02.1987 (at 5:00 AM, Hindaun City), Height- 5'-11", Education- Diploma in Electrical, Job- (Govt. Job) Working as Technical Supervisor in Vidyut Bhawan, Jaipur, Package- Rs. 5.50 LPA, Gotra : Self- Chorbambar, Mama- Behtariya, Contact : Sh. Trilok Chand Jain, 744-A, Devi Nagar, Gali No. 7, Sodala, Jaipur, Mob.: 7597111709, 7976744739 *(Sep.)*

★ **Aditya Jain** S/o Sh. Uttam Jain, DoB 12.10.1990 (at 11:20 pm, Alwar), Height- 5'-6", Education- B.Tech (ECE) Jaipur, M.Tech (BITS Pilani), Occupation- Senior Software Engineer,

WatchGuard Technologies, Noida, Package 16.76 LPA, Gotra : Self- Kashmeria, Mama- Choudhary, Contact : Janakpuri-II, Imali Phatak, Jaipur, Mob.: 9414405532 *(Sep.)*

★ **Abhay Jain** (Manglik) S/o Sh. Prakash Chandra Jain, DoB 20.11.1993 (at 7:25 am), Height 5'-11", B.Tech (Hons), Gotra : Self- Chorbhambar, Mama- Behtariya, Working in MNC Gurgaon as Senior Data Scientist, CTC 16 LPA, Contact : Meera Kunj, Mandawara Road, Jain Colony, Hindaun City, Mob.: 9024320476, 9667810819 *(Sep.)*

★ **Vinit Kumar Jain** S/o Sh. R.P. Jain, DoB 17.07.1989, Education- B.Tech (Machnical), Job- AM in RCDF, Plant at Nadbai, Gotra : Self- Ledoria, Mama-Athvarsiya, Contact : 846, Mukharji Nagar, Bharatpur, Mob.: 9413444164, 9414348915 *(Sep.)*

★ **Shubham Jain**, DoB 11.03.1996 (at 6:20 AM, Mandawar Dausa), Height 5'-4", Education- Graduation, Occupation : Business, Income 6 digit, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Borangdangiya, Contact : 77/167, Aravli Marg, Shipra Path, Mansarovar, Jaipur, Mob.: 9694707058, 9414067972 *(Sep.)*

★ **Shubham Jain** S/o Sh. Rajendra Kumar Jain, DoB 11.12.1992 (at 8:54 PM, Bharatpur), Height- 5'-7", Education- B.Tech (EC), Amity University, Jaipur, Occupation- Senior Software Engineer in Aggne Global IT Services Pvt. Ltd., Hyderabad, Package- 22 LPA, Gotra : Self- Divarya, Mama- Amiya, Contact : Sh. Rajendra Kumar Jain (Retd. CM, PNB), B-3, Ranjeet Nagar, Bharatpur, Mob.: 8452843745, 9414376416, Email : pnb.rkjain@gmail.com *(Sep.)*

★ **Divesh Jain** (Manglik) S/o Sh. Gian Chand Jain, DoB 29.06.1994 (at 6:15 PM), Height- 5'-3", Education- Post Graduate (MCA) IGNOU, Occupation- Senior IT Engineer at Taj Hotels Delhi, Gotra : Self- Mimunda, Mama- Vijeshwari, Contact : RZ E-58, Raj Nagar Part-2, Dada Dev Road, Palam, New Delhi-110077, Mob.: 9891394006, 9718869534 *(Sep.)*

★ **Ankur Jain** (Manglik) S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 31.07.1989 (at 6:50 pm, Agra), Height 5'-9", Education- Auto Eng., M.Sc. (Phy. 1st Div.), B.Ed., Occupation- Sr. Executive Technical Surveyor, ICICI Lumbard General Insurance, Income- 5 LPA, Gotra : Self- Chaurbambar, Mama- Sengarwasia, Mob.: 9258065928, 9045216301 *(Sep.)*

★ **Ankur Jain** S/o Sh. Yogesh Kumar Jain, DoB 22.11.1989 (at 1:20 Noon), Height 5'-11", Education- B.Com, MA (English), B.Ed., Job Profile- Teaching, Salary- 9 LPA, Gotra : Kotia, Contact : 76, Dream City, Agra, Mob.: 9359306952, 9897672345 *(Sep.)*

★ **Jeetendra Jain** (Manglik) S/o Sh. Susheel Kumar Jain, DoB 28.07.1993 (at 2:20 PM, Hindaun City), Height-5'-7", Education- B.Com., M.Com., Profession- Jain E-Mitra & Photo State (Jaipur), Gotra : Self- Baloriya, Mama- Choudhary, Contact : Jain Electrical Store, New Mandi, Hindaun City- 322230, Mob.: 9460628173, 9468841953 *(Sep.)*

★ **Chirag Jain** S/o Sh. Chandra Shekhar Jain, DoB 09.01.1995 (at 08:15 AM, Jaipur), Height 5'-7", Education- B.Tech in Mechanical Engg. & IOSH Certification, Job- Quality Engineer at Pee Tee Turners Ltd. (Pushp Group), Gotra : Self- Salawadiya, Mama- Bhadkoliya, Contact : Flat no. 102, Nakoda Tower, Binjari Marg, Dadi Ka Phatak, Jhothwara, Jaipur, Mob.: 9799434415, 8432244702 *(Sep.)*

★ **Sidhant Jain** S/o Sh. Hemant Kumar Jain, DoB 15.12.1993 (at 7:59 pm, Delhi), Height 5'-9", Education- B.Pharma (Delhi), MBA (Pharma), Occupation- Working with a Reputed Pharma Co., Bombay, Gotra : Self- Barolia,Mama- Angras, Contact : Motibagh, New Delhi-21, Mob.: 9810190295, 9811428964, Email : hemantkumarjain@ymail.com *(Sep.)*

★ **Vipul Kumar Jain** S/o Sh. Tikam Chand Jain, DoB 08.06.1994 (at 10:05 PM, Gahnoli, Mahwa, Dist. Dausa), Height- : 5'-6.5", Fair Complexion, Education- B.Tech, Occupation- Junior Engineer, Bharat Sanchar Nigam Ltd., Ludhiana, Gotra : Self- Baroliya, Mama- Bahattariya, Contact : VPO. Gahnoli, Teh. Mahwa, Dist. Dausa, Mob.: 9783522066, 9414714742 *(Sep.)*

★ **Vivek Jain** S/o Late Sh. Laxmi Kant Jain, DoB 06.06.1980 (at 06:15 AM, Ashok Nagar, Guna), Height- : 6Ft., Education- B.A., Occupation- Sales Executive with Singhvi Foods Pvt. Ltd., Guna, Gotra : Self- Kashmiria, Mama- Badwasia, Contact : Ram Krishnapuran, Opp. Mool Singh Dadabhi Bagrangarh Road, Guna-473001, Mob.: 9993040010, 9399118890, 8989456378, Email : gopeshjain1975@ gmail.com *(Sep.)*

★ **Pawan Jain** S/o Late Sh. Brijendra Kumar Jain, DoB 18.07.1976, Education- B.A. (Computer Science), Occupation- Business (General & Provisional Store), Income- 40,000/-, Gotra : Self- Rajeshwari, Mama- Maleshwari, Contact : Sh. Yogesh Jain, In Front Jain Mandir, Ramgarh, Dist.

Alwar, Mob.: 9602478710, 8949454678 *(Sep.)*

★ **Rahul Jain** S/o Sh. Ramesh Chand Jain, DoB 01.05.1993, Height 5'-8", Education- B.Tech. (Electronic and Communication), Occupation- NPD & Process Head in Babas Electronics Industries Pvt. Ltd. Manesar, Gurgaon, Income- 10.8 LPA, Gotra : Self- MastakDangya Chaudhary, Mama- Gindodiya, Contact : Sh. Ramesh Chand Jain, Ward No. 5, Kajodi Mohalla, Kherli, Alwar-321606, Mob.: 9783062749, 9252920276 *(Sep.)*

★ **Mohit Jain** S/o Sh. Vimal Kumar Jain, DoB 20.03.1994 (at 06:12 am), Height 5'-5", Education- BCA, MCA, Occupation- Private Job in Manpower India Pvt. Ltd. and Client Side British telecom Grugram as IT Associate Engineer, Gotra : Self- Kotiya, Mama- Vijeshwari, Contact : RZ-132\2, Street No. 4, Sadh Nagar, Palam Colony, New Delhi-110045, Mob.: 9818783172 *(Sep.)*

★ **Himanshu Jain** S/o Sh. Manoj Mohan Jain, DoB 08.06.1994 (at 11:55 am), Height 5'-7", Education- Chartered Accountant, BCOM, Occupation- Self Employed at Himanshu J & Associates, Belangaj, Agra, Gotra : Self- Chandpuria, Mama- Vairastak, Contact : 612, Sector 6C, Avas Vikas Colony, Sikandra, Bodla, Agra-282007, Mob.: 9412372816, 9412315497 *(Sep.)*

काश ! लौट आये बचपन

जब बचपन था, वो जवानी एक सपना थी।
जब जवान हुये, तो बचपन एक जमाना हुआ।
जब घर में रहते थे, तो आजादी अच्छी लगती थी।
आज आजादी है, फिर भी घर जाने की जल्दी रहती है।
कभी होटल में जाना, पिज्जा, बर्गर खाना पसंद था।
आज घर पर आना और मां के हाथ का खाना पसंद है।
स्कूल में जिनके साथ झगड़ते थे,
आज उनको ही इंटरनेट पर तलाश करते हैं।
खुशी किसमें होती है, यह पता अब चला है।
बचपन क्या? इसका अहसास अब हुआ है।
काश! बदल सकते हम जिन्दगी के कुछ साल।
काश! जी सकते हम जिन्दगी को फिर एक बार।
काश लौट आये बचपन!

-श्रीमती कविता जैन
महालक्ष्मीपुरम, कोटा

15वीं पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

स्व. इ. श्री पारसमल जी जैन
(ब्यावर वाले)
18.03.1947 - 29.09.2006

आप हमसे क्या बिछड़े,
जीवन में खुशियों का रंग ही उड़ गया।
लगता है दर्द से जीवन भर का नाता ही जुड़ गया है।
आज नहीं हो तुम मेरे साथ पर अपनी बातों से
अमूल्य बातों से,
हर पल आज भी साथ हो।

श्रद्धावनत

श्रीमती सन्तोष जैन
(धर्मपत्नी)

पुत्र-पुत्रवधु :
डॉ. गौरव जैन *(बैंक ऑफ बड़ौदा)*
-शालिनी जैन

पुत्री-दामाद :
भावना जैन-इ. कुलदीप जैन *(भीलवाड़ा)*
डॉ. कविता जैन-संदीप जैन *(कोटा)*

पौत्र- नव्य, ***पौत्री***- रिषिता, ***नवासा***- श्रेयांस, भव्यदीप, ***नवासी***- सोनल, राशी, सौम्या

विशेष श्रद्धावान : सतीश-चन्द्रा, रजनी, समीर, मिक्की, डॉ. चन्द्रशेखर-विनिता, राजेश-ममता जैन

निवास : 'जय-पारस', 102/117, मीरा मार्ग मन्दिर के पास, पटेल मार्ग, मानसरोवर, जयपुर-302020
मोबा.: 7014336410, 9352773740, 9314073740

(CR D-2611)

शरीर, मन एवं आत्मा

शरी, मन एवं आत्मा एक दूजे से जुड़े हुये हैं जीव के लिये ये तीनों महत्त्वपूर्ण है। जीव की पहचान भी इन से ही है। इनमें शरीर एवं आत्मा का तो सीधा सम्बंध है। यदि आत्मा को शरीर से निकाल दिया जाये, तो शरीर मृत हो जाता है। आत्मा से ही शरीर में जीवन है, चेतना है, 'मन' इन दोनों के बीच का वह पहलू है, जो दोनों को क्रियाशील रहने के लिये प्रेरित करता है।

प्रत्येक प्राणी को इनके बारे में जानकारी होनी चाहिये। क्योंकि ये तीनों विषय प्रत्येक मनुष्य के लिये महत्वपूर्ण है।

मानव शरीर हाड़, मांस एवं रक्त का एक पिंजरा है। इसमें मुख्य अंश मस्तिष्क, हृदय, फेफ्ड़े आमाशय, मल-मूत्र द्वार, हाथ-पैर तथा आंख, नाक, कान, मुंह आदि है। जो एक पतली चमड़ी से ढ़के हुये हैं। यह एक यंत्र की भांति कार्य करता है। जैसे गाड़ी को चलाने के लिये पेट्रोल अथवा डीजल की खुराक देनी पड़ती है उसी प्रकार इस शरीर को क्रियाशील रखने हेतु भोजन की आवश्यकता होती है। बीमार हो जाने पर दवा दी जाती है। स्वस्थ्य रहने हेतु व्यायाम, विटामिन; कैलोरी की उचित मात्रा देनी होती है तथा इसको जीवित रखने के लिए 'प्राण' संचार की आवश्यकता है। इसके बिना यह एक लाश के समान है। इसमें प्राणों का संचार एक अदृश्य, भार एवं आकार विहीन जिस शक्ति से होता है। उसे ''आत्मा'' कहते हैं। जब यह आत्मा इस शरीर से निकल जाती है तो वह निर्जीव हो जाता है। फिर इसे तत्काल जलाकर राख बना दिया जाता है। क्योंकि बिना आत्मा के इसमें दुर्गन्ध आने लगती है।

जब तक आत्मा है, यह चेतन कहलाता है। इसमें चेतना शक्ति रहती है। इस आत्मा में अनन्त शक्ति है। जानना, देखना इसका स्वभाव है इसमें मानव के भूत, भविष्य एवं वर्तमान का सारा ज्ञान है। यह अविनाशी है इसका नाथ नहीं होता है। जबकि शरीर नश्वर है, पुद्गल है। इस शरीर में चिंतन होने लगता है। विचार आने लगते हैं। इस चिंतन एवं विचार यन्त्र को ''मन'' कहते हैं। इनके अतिरिक्त शरीर में पांच इन्द्रियां होती है। किन्तु किसी जीव में एक, दो, तीन अथवा चार इन्द्रिया होती हैं। पशु, पक्षी एवं मानव में पांचो इंद्रियां होती है। ये इन्द्रियां मन के अधीन होती हैं एव मन आत्मा के अधीन है। इस कारण सर्वोपरि है आत्मा।

'मन' में जैसे-जैसे विचार आते हैं। इससे कर्म बनते हैं और ये कर्म आत्मा से चिपक कर आत्मा के गुणों को ढ़क देते हैं। इन्हीं कर्मों के कारण 'आत्मा' भी किसी शरीर में जन्म लेना पड़ता है। किन्तु जब ये सारे कर्म नष्ट हो जाते हैं तो 'आत्मा' अपने स्वभाव में आ जाती है। वह 'आत्मा' परमात्मा का रूप हो जाता है।

मानव, आत्मा के इस रूप को लाने के लिये कर्मो की निर्जरा करता है तथा नये कर्मों को आने से रोकता है इसके लिए वह 'आध्यात्म' का सहारा लेता है व्रत व तप करता है समाधि लेता है।

आत्मा से चिपके हुए कर्मों के अनुसार ही शरीर का निर्माण होता है जैसे हमारे कर्म होंगे वैसे ही योनी, उस जीव को मिलेगी और उस योनि के अनुसार ही शरीर बनेगा। आत्मा ही इस शरीर का जीवन है। शरीर के अंदर इस विचार या चिन्तन करने के यंत्र को ही ''मन''' कहते हैं। शरीर के अन्दर इन्द्रियां होती है। कुछ जीव एक इन्द्रिय, कुछ दो, तीन, चार, पांच इन्द्रिय जीव होते हैं।

तो हम मन के बारे में विचार कर रहे है। आत्मा तथा शरीर के बीच की कड़ी ''मन'' है। यदि किसी को शरीर से आत्मा निकल जाती है तो मन की क्रियायें भी समाप्त हो जाती है। किन्तु इन्द्रियां 'मन' के आधीन हैं। इस कारण शरीर को 'मन' के मुताबिक ही चलना पड़ता है। हम जैसे मन बनायेंगे, शरीर भी वैसा ही बन जावेगा।

मन जब शरीर से जुड़ता है तो संसार का जन्म होता है एवं जब आत्मा से जुड़ता है तब 'समाधि' पैदा होती है। संसार से वियोग होता है। मन ही बंधन एवं मोक्ष का कारण है। अदृश्य रहते हुये भी मन कितना ताकतवर है।

-श्रीमती सन्तोष जैन

'जय-पारस' 102/117, मानसरोवर, जयपुर

पूज्य पिताजी स्व. श्री कपूरचन्दजी जैन व माताजी स्व. श्रीमती अंगूरी देवी जैन की
पुण्य स्मृति में

विमल चन्द जैन (रेता वाले)

ग्रुप ऑफ कम्पनीज

DEALERS & SUPPLIERS OF SILICA SAND & OTHER GLASS RAW MATERIAL

AKHIL JAIN (M) 9690441107 • ANKIT JAIN (M) 9837478564

★ The Rajasthan Silica Sand Suppliers
★ Shree Vimal Silica Traders
★ S.B. Jain Mineral Enterprises

BIMAL CHAND JAIN
(Reta Wala)

ANKIT JAIN

AKHIL JAIN

128-129, गणेश नगर,
सेक्टर प्रथम,
पानी की टंकी के सामने,
फिरोजाबाद (उ.प्र.)
सम्पर्क :
Bimal Jain - 09837253305
Ankit Jain - 09837478564
Akhil Jain - 09690441107

RNI NO. RAJHIN/2012/47438 Postal Registration No. JAIPUR CITY/434/2019-21

RERA Registration No.
RAJ/P/2019/1054
www.rera.rajasthan.gov.in

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl
FORTUNE
3 BHK Boutique Apartments

Your perfect home is now
at a landmark address.

16 Smart Home 3 BHK Vastu Friendly | Site : B-138, Mangal Marg, Bapu Nagar, Jaipur

Pearl
Build Trust & Loyalty

Pearl India Buildhome (P) Ltd.
"Pearl Suryavanshi", 401, A-5, Sardar Patel Marg,
C-Scheme, jaipur - 302001. INDIA, Ph.: +91 141 4014044

Dr. Raj Kumar Jain +91 9414054745
Ar. Vijay Kumar Jain +91 9829010092

2 Decades of Excellence | 3600 Villas + Plots | More than 500 Apartments | 22 'Pearl' Tower | 6 Townships

If Undelievered, please return to :
श्री चन्द्रशेखर जैन *(संयोजक)*
86, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे,
जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 (राज.)

पत्रिका स्वामी- अखिल भारतीय पल्लीवाल जैन महासभा (रजि.) के लिए मुद्रक/प्रकाशक श्री चन्द्रशेखर जैन, 86, मगन विला, श्री विहार कॉलोनी, होटल क्लार्क आमेर के पीछे, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर-302018 ने गणेश आर्ट प्रिंटर्स, जे-51, कृष्णा मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर से मुद्रित, सम्पादक : श्री प्रकाश चन्द जैन।